WWW.Kanchanujala.in

हिन्दी दैनिक

kanchanujala14@gmail.com

कंचन उजाला

लखनऊ से प्रकाशित

सच्चाई के साथ

मां वैष्णो देवी से लेकर देवों के देव महादेव जैसे कई धार्मिक शो में दिख चुकी हैं एक्ट्रेस

वर्षः 01 अंक : 307 | लखनऊ, मंगलवार, 27 अक्टूबर, 2020 | पृष्ठ- 6 | मूल्य - 1 रुपये

राजनाथ सिंह और अमेरिकी रक्षा मंत्री की मुलाकात

चीन से तनाव के बीच सैन्य सहयोग बढ़ाने सहित कई मुद्दों पर चर्चा

नई दिल्ली, एजेंसी। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और उनके अमेरिकी समकक्ष मार्क टी एस्पर ने सोमवार को विभिन्न मुद्दों पर व्यापक चर्चा की। उन्होंने दोनों देशों के बीच सैन्य सहयोग को और बढ़ाने के तरीकों के अलावा तेजी से बढ़ते रक्षा तथा सामरिक संबंधों से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर भी चर्चा की। अमेरिकी विदेश मंत्री माइक पोम्पिओ और रक्षा मंत्री एस्पर तीसरी टू प्लस टू मंत्री स्तरीय बैठक के लिए सोमवार को यहां पहुंचे। यह बैठक मंगलवार को होगी जिसमें हिंद-प्रशांत क्षेत्र में सहयोग

के साथ ही समग्र रक्षा और सुरक्षा संबंधों को बढ़ाने पर जोर दिए जाने की उम्मीद है। इस बैठक में भारतीय पक्ष का नेतृत्व विदेश मंत्री एस जयशंकर और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह करेंगे। यह बैठक ऐसे समय हो रही है, जब भारत का चीन के साथ सीमा पर गतिरोध जारी है और इस मुद्दे पर भी चर्चा होने की उम्मीद है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप प्रशासन के दो प्रमुख अधिकारी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल से भी मुलाकात करेंगे। सिंह के साथ बातचीत के पहले अमेरिकी रक्षा मंत्री को रायसीना हिल में साउथ ब्लॉक के बाहर तीनों सेनाओं की ओर से गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। अमेरिका पिछले कुछ महीनों में विभिन्न मुद्दों को लेकर चीन की काफी आलोचना करता रहा है। इन मुद्दों में भारत के साथ सीमा विवाद, दक्षिण चीन सागर में उसकी बढ़ती सैन्य आक्रामकता, और हांगकांग में सरकार-विरोधी प्रदर्शनों से निपटने के तरीके शामिल हैं। पोम्पिओ की यात्रा से पहले अमेरिकी विदेश मंत्रालय ने कहा कि अमेरिका भारत के एक प्रमुख क्षेत्रीय और वैश्विक शक्ति के रूप में उभरने का स्वागत करता है। विदेश मंत्रालय ने कहा, अमेरिका एक प्रमुख क्षेत्रीय और वैश्विक शक्ति के रूप में भारत के उभरने का स्वागत करता है। अमेरिका संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में आगामी कार्यकाल के दौरान भारत के साथ निकट सहयोग के लिए उत्सुक है।

कोरोना के 50 हजार से कम नये केस

नयी दिल्ली, एजेंसी। देश में कोरोना वायरस संक्रमण की रफ्तार लगातार धीमी होती जा रही है और काफी दिनों बाद इसके एक दिन में 50 हजार से कम नये मामले सामने आये हैं तथा इससे होने वाले मौत की संख्या भी पांच सौ से कम हो गयी है। केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की ओर से सोमवार को जारी आंकड़ों के अनुसार पिछले 24 घंटों के दौरान कोविड-19 के 45,149 नये मामले सामने आये और इसके बाद देश में संक्रमितों की कुल संख्या 79,09,960 हो गयी। इसी अवधि में 59,165 लोगों ने इस जानलेवा विषाणु को मात दी है और इसे मिलाकर देश में अब तक 71,37, 228 मरीज कोरोनामुक्त हो चुके हैं। कोविड-19 नये मामलों की तुलना में स्वस्थ होने वालों की संख्या अधिक होने से सक्रिय मामले 14,437 घटकर 6,53,717 हो गये हैं। वहीं पिछले 24 घंटे में 480 मरीजों की मौत होने के बाद इससे जान गंवाने वाले लोगों की संख्या 1,19,014 हो गयी है। देश में स्वस्थ होने वालों की दर बढ़कर 90.23 प्रतिशत और सक्रिय मामलों की दर 8.26 प्रतिशत रह गयी है, जबकि मृत्यु दर घटकर 1.50 फीसदी पर आ गयी है। कोरोना महामारी से सबसे अधिक प्रभावित महाराष्ट्र में पिछले 24 घंटों के दौरान सक्रिय मामलों में 299 की बढ़ोतरी हुयी है और अब यह 1. 41 लाख हो गये हैं, जबकि 112 लोगों की मौत होने से मृतकों की संख्या 43,264 हो गयी है। वहीं इस दौरान 5,648 लोग स्वस्थ हुए हैं, जिससे इस महामारी से निजात पाने वाले लोगों की संख्या 14.60 हो गयी है।

महबूबा के बयान से नाखुश पीडीपी के तीन नेताओं ने पार्टी से दिया इस्तीफा

नई दिल्ली, एजेंसी। जम्मू कश्मीर में महबूबा मुफ्ती की पार्टी पीडीपी को तगड़ा झटका लगा है। सोमवार को पीडीपी नेता टीएस बाजवा, वेद महाजन और हुसैन ए वफा ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया है। पार्टी अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती को लिखे एक पत्र में इन नेताओं ने कहा है कि उनके कुछ कार्यों और विशेषकर उनके कुछ बयान जो कि देशभक्ति की भावनाओं को आहत करने वाले हैं और उन्हें असहज महसूस करा रहे हैं। दरअसल, महबूबा मुफ्ती ने पिछले दिनों एक बयान दिया था कि जब तक जम्मू कश्मीर में अनुच्छेद 370 के प्रावधान दोबार से लागू नहीं हो जाते हैं तक वह कोई भी झंडा नहीं थामेंगी। अपने आवास पर संवाददाताओं से कहा था, जहां तक पीडीपी की बात है, तो अब हम अकेले नहीं हैं। अगर आप को याद हो, तो हमने नेशनल कॉन्फ्रेंस के साथ (2018) पंचायत चुनाव से पहले एक संयुक्त रुख अपनाया था कि हम उसमें भाग नहीं लेंगे। इस बार भी हम पार्टी के भीतर, अपने कार्यकर्ताओं से इस पर चर्चा करेंगे, और फिर पीपुल्स एलायंस (फॉर गुपकर डिक्लेयरेशन) में इस पर चर्चा करेंगे। हम वहां जो निर्णय लेंगे, वह सब पर लागू होगा। उन्होंने कहा था, जहां तक मेरी बात है, तो मुझे चुनाव में कोई दिलचस्पी नहीं है। जब तक वह संविधान हमें वापस नहीं मिल जाता जिसके तहत मैं चुनाव लड़ती थी, महबूबा मुफ्ती को चुनाव से कोई लेना देना नहीं है। बता दें कि पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती द्वारा तिरंगे झंडे को लेकर दिए गए बयान को लेकर पार्टी के खिलाफ जम्मू में कई संगठनों ने प्रदर्शन किया।

लद्दाख में बीजेपी की बड़ी जीत, कांग्रेस को फिर करना पड़ा हार का सामना

लेह, एजेंसी। लद्दाख ऑटोनोमस हिल डिवेलपमेंट काउंसिल इलेक्शन (एलएएचडीसी) में बीजेपी ने बड़ी जीत दर्ज की है तो कांग्रेस को एक बार फिर हार का सामना करना पड़ा। कुछ 26 सीटों पर हुए चुनाव में बीजेपी ने 15 सीटों पर जीत दर्ज की तो कांग्रेस को 9 सीटें मिलीं। वहीं 2 सीटों पर निर्दलीय उम्मीदवारों ने भी जीत हासिल की है। लद्दाख स्वायत्त पर्वतीय विकास परिषद के चुनाव के बाद सोमवार को मतगणना के लिए तीन स्तरीय सुरक्षा व्यवस्था की गई है। कुल 89,776 पंजीकृत मतदाताओं में से लगभग 65 प्रतिशत लोगों ने 26 चुनाव क्षेत्रों में 294 मतदान केंद्रों पर गुरुवार को मताधिकार का प्रयोग किया। इस चुनाव में 94 प्रत्याशियों ने भाग लिया जिसमें से भाजपा और कांग्रेस के 26-26 उम्मीदवार थे। आम आदमी पार्टी ने भी पहली बार इस चुनाव में अपने 19 प्रत्याशियों को मैदान में उतारा।

इंडिया एनर्जी फोरम में बोले प्रधानमंत्री मोदी

ऊर्जा के क्षेत्र में भारत का भविष्य शानदार और सुरक्षित

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार शाम को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिये इंडिया एनर्जी फोरम को संबोधित किया। इस दौरान मोदी ने कहा कि भारत का ऊर्जा के क्षेत्र में भविष्य बहुत शानदार और सुरक्षित रहने वाला है। भारत तेजी से इस पर काम कर रहा है। आने वाले कुछ वर्षों में भारत में एनर्जी खपत दोगुनी हो जाएगी। उन्होंने कहा कि भारतीय बाजार को कोई नजरअंदाज नहीं कर सकता है। इंडिया एनर्जी फोरम वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिये प्रधानमंत्री मोदी ने दुनिया की दिग्गज तेल और गैस कंपनियों के सीईओ के साथ बातचीत की। मोदी ने कहा कि भारत घरेलू विमानन के मामले में तीसरा सबसे बड़ा और सबसे तेजी से बढ़ता विमानन बाजार है। प्रधानमंत्री ने इस अपने संबोधन के दौरान दुनियाभर के निवेशकों को क्लीन एनर्जी में निवेश के लिए आह्वान किया। उन्होंने कहा कि क्लीन एनर्जी में निवेश के लिए दुनिया में भारत सबसे बेहतर विकल्प बनकर उभरा है। उन्होंने कहा कि भारत की ऊर्जा योजनाओं का उद्देश्य ऊर्जा न्याय सुनिश्चित करना है। वह भी स्थायी लक्ष्यों के लिए हमारी वैश्विक प्रतिबद्धताओं का पूरी तरह से पालन करते हुए। मोदी ने आगे कहा कि दुनिया भर की बड़ी तेल कंपनियों को ऊर्जा क्षेत्र को लेकर मंथन करने की आवश्यकता है। इसके लिए भारत हमेशा सहयोग के लिए तैयार है। प्रधानमंत्री ने कहा कि एनर्जी कोरिडोर बनाने की योजना है। प्रधानमंत्री मोदी इंडिया एनर्जी फोरम में पेट्रोलियम मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने भी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिये भाग लिया। इस बैठक में प्रमुख तेल एवं गैस कंपनियों के करीब 45 सीईओ शामिल हुए हैं।

बुजुर्गों और वयस्कों दोनों पर कारगर है ऑक्सफोर्ड की कोरोना वैक्सीन

नयी दिल्ली/लंदन, एजेंसी। दुनिया भर में कोरोना वायरस (कोविड-19) के संक्रमण के कारण मचे कोहराम के बीच एक अच्छी खबर यह है कि ब्रिटेन की ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी और दवा कंपनी एस्ट्राजेनेका द्वारा विकसित की जा रही कोरोना वैक्सीन बुजुर्गों और वयस्कों दोनों पर अच्छा असर दिखा रही है। विदेशी मीडिया में आयी रिपोर्टों के मुताबिक, ऑक्सफोर्ड की कोरोना वैक्सीन देने के बाद बुजुर्गों में एंटीबॉडीज और टी सेल बने, जो कोरोना वायरस को मात देने में व्यक्ति को सक्षम बनाते हैं। कोरोना वैक्सीन के परीक्षण में शामिल बुजुर्ग वालंटियर्स की गत जुलाई में जारी ब्लड रिपोर्ट के आंकड़ों के विश्लेषण से यह तथ्य सामने आया है कि वैक्सीन देने के बाद उनमें अच्छी खासी मात्रा में रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित हुई है।

तेजस्वी ने प्याज की माला लेकर बढ़ते दाम पर सरकार को घेरा

पटना, एजेंसी। बिहार चुनाव के बीच सोमवार को राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के नेता और महागठबंधनके मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार तेजस्वी यादव ने महंगाई को मुद्दा बनाने की कोशिश की। इस दौरान तेजस्वी ने प्याज की माला लेकर लोगों के सामने पहुंचे और प्याज और आलू की बढ़ती कीमत को लेकर केंद्र और राज्य सरकार पर हमला बोला। तेजस्वी ने कहा कि आलू प्याज की कीमत लगातार बढ़ रही है, लेकिन सरकार का ध्यान इस ओर नहीं है। तेजस्वी ने सरकार को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि प्याज 100 रुपये के करीब पहुंचने वाला है। रोजगार नहीं है, लोगों के खाने के लाले पड़े हैं। प्याज 50-60 रुपये किलो होने पर प्याज का रोना जो लोग रोते थे अब ये लोग कहां हैं। अब तो प्याज की कीमत 80 रुपये प्रति किलो के पार है। देशभर में गरीबों को पूछा नहीं जा रहा है, उन पर हमले किए जा रहे है। तेजस्वी ने अपने ट्विटर हैंडल पर टवीट कर भी लिखा, श्श्कमर तोड़ महंगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी से आम आदमी त्राहिमाम कर रहा है। काम-धंधा ठप्प है। किसान, मजदूर, नौजवान और व्यापारी वर्ग को खाने के लाले पड़े हैं। छोटे व्यापारियों को भाजपा सरकार ने मार दिया है। महंगाई बढ़ने पर ये लोग प्याज की माला पहन कर घूमते थे अब हम उन्हें यह सौंप रहे हैं। श्राजद नेता ने कहा कि चुनाव में महंगाई सबसे बड़ा मुद्दा है। छोटे व्यापारी नष्ट हो रहे हैं, गरीबी बढ़ रही है। जीडीपी गिर रही है, हम एक आर्थिक संकट से गुजर रहे हैं। ऐसे में बीजेपी व गठबंधन दल के लोग चुप हैं। उन्होंने कहा कि पेट्रोल, डीजल से लेकर खाने-पीने के सामानों के दामों में वृद्धि हो रही है। उन्होंने कहा कि बिहार में ब्लैक मार्केट बढ़ गया है।

भीम आर्मी प्रमुख का दावा काफिले पर हुआ हमला पुलिस ने किया इनकार

बुलंदशहर, एजेंसी। बुलंदशहर जिले में एक रैली को संबोधित करके लौट रहे भीम आर्मी के प्रमुख चंद्रशेखर के काफ्लि पर रविवार की देर रात कथित तौर पर हमला हुआ। आजाद ने कहा कि उनके काफ्लि पर गोलीबारी की गई। चंद्रशेखर आजाद ने रविवार की देर रात ट्वीट किया, विपक्षी दलों ने बुलंदशहर चुनाव के हमारे उम्मीदवार को डराया। आज की रैली के बाद मेरे काफ्लि पर कायराना तरीके से गोली चलाई गई। यह उनकी हताशा को दर्शाता है .. वे माहौल को जहरीला बनाना चाहते हैं लेकिन हम ऐसा नहीं होने देंगे। आजाद ने कहा कि उनके काफ्लिा पर तब गोली चली जब उनकी आजाद समाज पार्टी के सदस्य आगामी उपचुनाव के लिए प्रचार कर रहे थे। यह स्पष्ट नहीं है कि भीम सेना प्रमुख खुद घटना के समय मौजूद थे या नहीं।

दिल्ली और एनसीआर में प्रदूषणः केंद्र ने सुप्रीमकोर्ट में कहा-जल्द बनेगा कानून

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्र सरकार ने सोमवार को सुप्रीम कोर्ट में कहा कि पड़ोसी राज्यों में पराली जलाए जाने से दिल्ली-एनसीआर में होने वाले वायु प्रदूषण से निपटने के लिए जल्द कानून बनाया जाएगा। केंद्र के आग्रह पर शीर्ष कोर्ट ने 16 अक्तूबर के अपने उस आदेश पर रोक लगा दी, जिसमें रिटायर्ड जस्टिस मदन बी. लोकुर की अध्यक्षता में एक कमेटी बनाई गई थी। इस कमेटी को पड़ोसी राज्यों द्वारा खेतों में पराली जलाने से रोकने के उपायों पर निगरानी का जिम्मा सौंपा गया था। मामले की सुनवाई चीफ जस्टिस एसए बोबड़े की अध्यक्षता वाली तीन सदस्यीय पीठ ने की। केंद्र का पक्ष सुनने के बाद लोकुर समिति के गठन के आदेश पर रोक लगा दी गई। पीठ में जस्टिस एएस बोपन्ना व जस्टिस वी. रामासुब्रमण्यम भी शामिल हैं। शीर्ष कोर्ट ने कहा, एकमात्र मुद्दा यह है कि प्रदूषण के कारण लोगों का दम घुट रहा है और उसे अवश्य रोका जाना चाहिए। सॉलिसीटर जनरल तुषार मेहता ने पीठ से कहा कि केंद्र ने इस मामले में समग्र रूप से विचार किया है। प्रदूषण रोकने के प्रस्तावित व्यापक कानून का प्रारूप सुप्रीम कोर्ट में चार दिन में पेश कर दिया जाएगा। इससे पूर्व शीर्ष कोर्ट ने 16 अक्तूबर के अपने आदेश में पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश व दिल्ली-एनसीआर के खेतों में पराली जलाए जाने की निगरानी में मदद के लिए एनसीसी, एनएसएस व भारत स्काऊट्स के कैडेट्स को तैनात करने को कहा था।

विलय दिवस पर भाजपा ने निकाली तिरंगा कार रैली

श्रीनगर, एजेंसी। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने सोमवार को कश्मीर के 73वें विलय दिवस के मौके पर कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच जम्मू-कश्मीर तिरंगा कार रैली निकाली। उल्लेखनीय है कि जम्मू-कश्मीर के महाराजा हरि सिंह ने 26 अक्टूबर 1947 को अपनी रियायत के भारत में विलय करने को लेकर हुए समझौते पर हस्ताक्षर किए थे। इससे पहले श्रीनगर के लाल चौक पर तिरंगा फहराने की कोशिश करने वाले कुपवाड़ा के भाजपा कार्यकर्ताओं को हिरासत में ले लिया। श्रीनगर में सुबह से ही सभी दुकानें और व्यापारिक प्रतिष्ठान बंद हैं। पार्टी उपाध्यक्ष सोफी यूसुफ तथा प्रवक्ता अल्ताफ ठाकुर सहित काफी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता टैगोर हॉल में इकट्ठा हुए। यहां किसी तरह की अप्रिय घटना को रोकने के लिए सुबह से ही भारी संख्या में केंद्रीय अर्धसैनिक बलों तथा राज्य पुलिस के जवानों को भारी संख्या में तैनात किया गया था। राष्ट्रीय ध्वज लगे वाहनों को कड़ी सुरक्षा के बीच गुपकर रोड से होते हुए प्रसिद्ध डल झील के किनारे स्थित एस. के. इंटरनेशनल कनवेंशन काम्प्लेक्स के लिए रवाना किया गया। उल्लेखनीय है कि गुपकर रोड पर ही प्रदेश के तीन मुख्यमंत्रियों डॉ. फारूक अब्दुल्ला, श्री उमर अब्दुल्ला तथा सुश्री महबूबा मुफ्ती का आवास है। रैली शुरू होने से पहले श्री ठाकुर ने कहा कि यह उन सभी देशद्रोही नेताओं और पार्टियों को करारा जवाब है, जो राष्ट्रीय ध्वज का अनादर करते हैं। मैं सुश्री महबूबा और डॉ. अब्दुल्ला को बताना चाहता हूं कि राष्ट्र विरोधी गतिविधियों के लिए कोई जगह नहीं है क्योंकि कश्मीर अब बदल गया है।

विरोधियों के खिलाफ संस्थाओं का इस्तेमाल कर रही है सरकारः सोनिया

नयी दिल्ली, एजेंसी। कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने मोदी सरकार पर तीखा हमला करते हुए उस पर लोकतांत्रिक संगठनों का दुरुपयोग करने का सोमवार को आरोप लगाते हुए कहा कि वह संस्थाओं के माध्यम से विरोधियों की आवाज़ दबाने का काम कर रही है। श्रीमती गांधी ने आज एक अंग्रेजी दैनिक में प्रकाशित अपने लेख में कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार लोकतंत्र के स्तंभो पर हमले कर उनको विकृत करने में जुटी है और लोकतंत्र को मजबूत करने वाले प्रत्येक संस्थान का इस्तेमाल विपक्ष पर हमले के लिए किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सरकार की गलत नीतियों के कारण विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र खतरे में आ गया है। देश की अर्थव्यवस्था गंभीर संकट में फंस गई है और सरकार इससे उबरने के प्रयास करने की बजाय लोकतांत्रिक संस्थाओं का दुरुपयोग कर विरोधियों पर हमला कर रही है। बोलने की आजादी छीनी जा रही है और लोकतांत्रिक व्यवस्था को मजबूत करने वाले संस्थाओं का दुरुपयोग हो रहा है। कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने पूरे तंत्र को ही ध्वस्त कर दिया है। जांच एजेंसियों का इस्तेमाल विपक्ष को डराने और धमकाने के लिए किया जा रहा है। सरकार का निशाना विपक्ष के नेता है और केन्द्रीय जांच ब्यूरों (सीबीआई) तथा आईएनए जैसी जांच एजेंसियां प्रधानमंत्री तथा ग्रह मंत्री के इशारे पर काम कर रही हैं।

मोहन भागवत का संबोधन, चीन से निपटने को तैयार रहे भारत

जालंधर, एजेंसी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सरसंघचालक मोहन भागवत ने विजयदशमी उत्सव पर रविवार को नागपुर में देश को संबोधित किया। कोरोना महामारी के दिशा-निर्देशों के कारण संघ ने इस कार्यक्रम का आयोजन इस साल सीमित रखा था जिसमें 50 स्वयंसेवकों ने हिस्सा लिया। भागवत ने कहा कि भारत को चीन से निपटने के लिए तैयार रहना चाहिए। इसके लिए भारत को बेहतर सैन्य तैयारी करने की जरूरत है। चीन ने महामारी के बीच में हमारी सीमाओं का अतिक्रमण किया लेकिन चीनी घुसपैठ पर भारत की प्रतिक्रिया से वह सकते में है। उस देश की विस्तारवादी प्रकृति से पूरी दुनिया अवगत है और कई देश चीन के सामने खड़े हैं। उन्होंने इसके लिए ताइवान व वियतनाम का उदाहरण दिया। हमारी सेना की अटूट देशभक्ति व अदम्य वीरता, हमारे शासनकर्त्ताओं के स्वाभिमानी रवैए तथा भारत के लोगों के दुर्दम्य संकल्प व धैर्य का जो परिचय चीन को पहली बार मिला है, उससे उसके भी ध्यान में यह बात आनी चाहिए। इससे उसके रवैए में सुधार होना चाहिए, परंतु नहीं हुआ तो जो परिस्थिति आएगी, उसमें हम लोगों की सजगता, तैयारी व दृढ़ता कम नहीं पड़ेगी, यह विश्वास आज राष्ट्र में सर्वत्र दिखता है। श्रीलंका, बंगलादेश, नेपाल जैसे पड़ोसी देशों, जो हमारे मित्र हैं, के साथ हमें अपने संबंधों को अधिक मित्रतापूर्ण बनाने के लिए अपनी गति तेज करनी चाहिए।

बिहार चुनाव 2020

पहले चरण के लिए थमा प्रचार का शोर, 28 को वोटिंग

पटना, एजेंसी। बिहार विधानसभा के पहले चरण के चुनाव के लिए प्रचार का शोर सोमवार की शाम को थम गया। 28 अक्टूबर को इस चरण में 16 जिलों की 71 सीटों के लिए मतदान होना है। पहले चरण में राज्य सरकार के आठ मंत्रियों समेत कई दिग्गज मैदान में हैं, जिनके भाग्य का फैसला 28 को ईवीएम में कैद हो जाएगा। इस चरण में जिन दिग्गजों के भाग्य का फैसला होना है, उनमें शिक्षा मंत्री कृष्णनंदन प्रसाद वर्मा, कृषि मंत्री प्रेम कुमार, ग्रामीण कार्य मंत्री शैलेश कुमार,विज्ञान एवं प्रावैधिकी मंत्री जय कुमार सिंह, राजस्व मंत्री रामनारायण मंडल, श्रम संसाधन मंत्री विजय कुमार सिन्हा, खनन मंत्री बृजकिशोर बिंद और परिवहन मंत्री संतोष कुमार निराला शामिल हैं। इसके अलावा पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष उदय नारायण चौधरी, पूर्व मंत्री विजय प्रकाश, श्रेयसी सिंह, अनंत सिंह, राजेंद्र सिंह, रामेश्वर चौरसिया और भगवान सिंह कुशवाहा मैदान में हैं। पहले चरण में जिनके भाग्य का फैसला होना है, उनमें राजद के 42 तो जदयू के 35 उम्मीदवार शामिल हैं। इसके अलावा भाजपा के 29, कांग्रेस के 21, माले के आठ, हम के छह और वीआईपी के एक प्रत्याशी इस चरण में ताल ठोके हुए हैं। इसी प्रकार रालोसपा के 43, लोजपा के 42 और बसपा के 27 उम्मीदवार हैं। लोजपा के 42 उम्मीदवारों में 35 जदयू के खिलाफ है। वहीं, छह हम तथा एक वीआईपी के विरुद्ध लड़ रहे हैं।

योगी सरकार की अपील

कोरोना वायरस काबू में मगर एहतियात बरतने की जरूरत

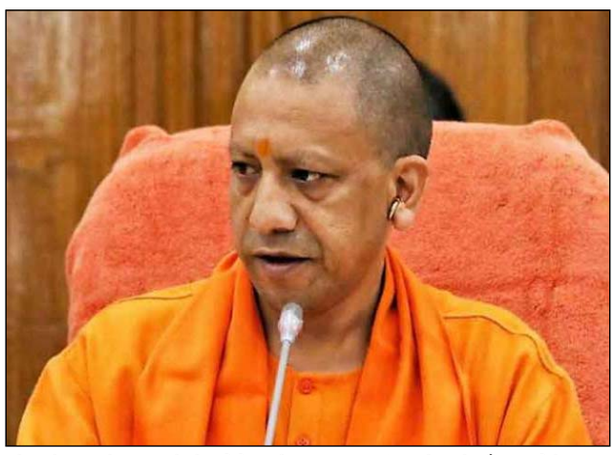

लखनऊ, संवाददाता। उत्तर प्रदेश में त्योहारों के मद्देनजर सरकार ने कोरोना संक्रमण को लेकर लोगों से एहतियात बरतने की अपील की है। सूबे के अपर मुख्य सचिव सूचना नवनीत सहगल ने रविवार को कहा कि कोविड-19 के संक्रमण दर में लगातार गिरावट आ रही है लेकिन यह समय और अधिक सावधान रहने का है। त्योहारों पर विशेष सावधानी तथा भीड़-भाड़ वाले इलाकों में जाने से बचें। घर से निकलने से पहले मास्क जरूर पहनकर निकलें। अपर मुख्य सचिव चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अमित मोहन प्रसाद ने कहा कि प्रदेश में कल एक दिन में कुल 1,17,431 सैम्पल की जांच की गयी। प्रदेश में अब तक कुल 1,40,25,713 सैम्पल की जांच की गयी है। उन्होंने बताया कि प्रदेश में पिछले 24 घंटे में कोरोना से संक्रमित 2052 नये मामले आये हैं। प्रदेश में विगत 24 घंटे में 2368 मरीज उपचारित होकर डिस्चार्ज हुए हैं। प्रदेश में अब तक कुल 4,36,071 व्यक्ति उपचारित होकर डिस्चार्ज किये गये हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश में रिकवरी का प्रतिशत अब बढ़कर 92.72 प्रतिशत हो गया है। प्रदेश में 27,317 कोरोना के एक्टिव मामले हैं। होम आइसोलेशन में 12,229 लोग हैं। अब तक कुल 2,64,352 लोग होम आइसोलेशन की सुविधा प्राप्त करते हुए 2,52,123 लोगों ने अपने होम आइसोलेशन की अवधि पूर्ण कर ली है। उन्होंने बताया कि निजी चिकित्सालयों में 1373 लोग ईलाज करा रहे हैं। प्रसाद ने बताया कि अक्टूबर के महीने में संक्रमण का जो स्तर है प्रदेश की पॉजीटिविटी रेट दो प्रतिशत रही है लेकिन कुछ जिले ऐसे हैं जो पॉजीटिविटी रेट में सबसे ज्यादा हैं, ऐसे जिले लखनऊ, प्रयागराज, गाजियाबाद, गौतमबुद्ध नगर और मेरठ हैं। सबसे कम पॉजीटिविटी वाले कानपुर देहात, हाथरस, श्रावस्ती, बागपत और पीलीभीत जिले हैं। उन्होंने बताया कि कोई भी व्यक्ति बिना मास्क पहने घर से बाहर न निकले और सावधानी रखनी की आवश्यकता है।

यूपी कौशल विकास मिशन के ऑफिस में लगी आग

लखनऊ, संवाददाता। यूपी की राजधानी लखनऊ में रविवार को अलीगंज स्थित उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन के कार्यालय में भीषण आग लग गई। आग लगने से हड़कंप मच गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने फायर विभाग को बुलाया। दमकल की तीन गाड़ियां आग को बुझा रही हैं। उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन का कार्यालय रविवार को बंद था। दिन में ऑफिस के दूसरे मंजिल से अचनाक धुआं उठता देख कर आसपास के लोगों ने इसकी सूचना पुलिस को दी। पुलिस जब तक मौके पर पहुंचती तब तक आग तेज हो गई थी। पुलिस ने सूचना फायर विभाग को दी। दमकल गाडियां आग को बुझाने में लगी हैं। हालांकि आग किस वजह से लगी अभी तक पता नहीं चल पाया है। आशंका जताई जा रही है कि दशहरे की वजह ऑफिस बंद था इसलिए शार्टसर्किट आग की वजह हो सकती है। आग से फर्नीचर और दस्तावेज जलने की बात कही जा रही है।

महाकाल में सोमवारीय अनुष्ठान के साथ किया गया दशमी का पूजन

लखनऊ, संवाददाता। राजेन्द्र नगर स्थित महाकाल मंदिर में सोमवार को दशमी का पूजन किया गया। इस अवसर पर वहां सुबह रुद्राभिषेक किया गया और संध्या आरती से पहले बाबा का भव्य सोमवारीय श्रंगार किया गया। वरिष्ठ सेवादार अतुल मिश्रा के मार्गदर्शन में नवरात्र के दौरान अखंड ज्योत प्रज्वलित कर आचार्यों की उपस्थिति में विधि-विधान से पूजन किया गया। नवमी पर सर्वजन सुखाये, सर्वजन हिताये के अमर भावना के साथ महा हवन किया गया। सोमवार को महादेव के साप्ताहिक दिवस और दशमी होने के कारण भक्तगण सुबह से ही मंदिर में दर्शन के लिए आने लगे थे। वहां प्रशासनिक निर्देशों का पालन करते हुए महाकाल को मेवे का भोग लगाया गया। इसके साथ ही मंदिर प्रशासन की ओर से फेस मास्क है जरूरी अभियान के तहत निरूशुल्क मास्क भी बांटे जा रहे हैं।

सत्य की विजय पर शक्ति के रूप में शस्त्र पूजन कर दिया संदेश

लखनऊ, संवाददाता। हिंदू जागरण मंच ने विजय दशमी पर शस्त्र पूजन कर प्रभु श्रीराम के जीवन चरित्र को याद किया। जहां मानवता व धर्म के लिए प्रभु श्री राम ने मर्यादा पुरुषोत्तम बनकर कर त्याग की शिक्षा दी। वहीं अधर्म व आतंक के विरुद्ध काल बनकर अधर्म का नाश किया। राजधानी लखनऊ में विजयदशमी के पर्व पर हिंदू जागरण मंच के द्वारा बसंत खेड़ा सरोजिनी नगर मे शस्त्र पूजन कार्यक्रम का आयोजन किया गया।तथा हिन्दू जागरण मंच उत्तर प्रदेश अध्यक्ष विजय बहादुर सिंह ने भगवान श्रीराम की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर विधि विधान से शस्त्र पूजन किया उसके उपरांत संगठन के कार्यकर्ताओं द्वारा प्रदेश अध्यक्ष ,प्रांतीय उपाध्यक्ष का माल्यार्पण कर स्वागत किया गया एवं शस्त्र स्वरूप तलवार भेंट कर सम्मानित किया गया। तथा प्रांतीय उपाध्यक्ष बाबू मिश्रा ने कहां की विजयदशमी उत्सव असत्य पर सत्य की विजय का प्रतीक है जो हिंदू समाज को शक्ति संपन्न होने का संकेत करता है त्रेता युग में भगवान राम के सामने रावण जैसी चुनौतियां थी तो आज वैश्विक समस्या बन चुकी विभिन्न स्वरूपों में इस्लामिक आतंकवाद, धर्मांतरण करा रही ईसाई मिशनरी, लव जिहाद ,लैंड जिहाद से निपटने की चुनौतियां सामने खड़ी हैं।

बेटी और बहन की रक्षा का लिया गया संकल्प

लखनऊ, संवाददाता। नौ दिवसीय नवरात्र के अंतिम दिन मां सिद्धिदात्री का पूजन गोमती नगर के रेल विहार कॉलोनी में किया गया। इस अवसर पर मां के दरबार के समक्ष लोगों ने बेटी और बहन की रक्षा का सामूहिक संकल्प भी लिया। रेल विहार परिसर में नवरात्र के अवसर पर मां का भव्य दरबार सजाया गया था। नव अंशिका फाउंडेशन संस्था की महिला यूथ विंग की अध्यक्षा नीशू मनोज की उपस्थिति में वहां प्रशासनिक निर्देशों पालन करते हुए भक्तगणों ने महिलाओं की सुरक्षा का संकल्प लिया। उन्होंने कहा कि हिन्दुस्तानी संस्कृति के अनुरूप हर भारतीय का यह नैतिक कर्तव्य है कि वह विश्व को एक कुटुम्ब के रूप में ही सम्मान दे। गोमती नगर की रेल विहार कालोनी के स्टूडियो में लोकप्रिय नृत्यांगना अंशिका त्यागी ने नृज्यांजलि में सबसे पहले प्रथम देव गणेश को नमन करते हुए कृपा करो गौरी के लाल भजन पर भाव नृत्य पेश किया। इस क्रम में देवी मां का आवाह्न करते हुए अंशिका ने तेरा सजा दिया दरबार मइया आ जाओ पर सुंदर नृत्य किया।

कल लखनऊ को मिलेगी 51 करोड़ के विकास कार्यों की सौगात रक्षामंत्री राजनाथ सिंह करेंगे शुभारंभ

लखनऊ, संवाददाता। सड़क व जल निकासी से जुड़े 51 करोड़ रुपये की लागत से होने वाले 176 विकास कार्यों का शिलान्यास बुधवार को रक्षा मंत्री व सांसद राजनाथ सिंह वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से करेंगे। इस दौरान नगर निगम मुख्यालय में महापौर संयुक्ता भाटिया मौजूद रहेंगी। रक्षा मंत्री जिन विकास कार्यों का शिलान्यास करेंगे, उनकी टेंडर प्रक्रिया नगर निगम पूरी कर चुका है। ये काम बीते साल सरकार से मिले 14वें वित्त मद के बजट के हैं जो लॉकडाउन के कारण अटक गए थे। महापौर ने बताया कि शिलान्यास बीते शनिवार को होना था, लेकिन पार्षद रमेश कपूर बाबा के निधन से कार्यक्रम स्थगित कर दिया गया था। अब रक्षा मंत्री ने 28 अक्तूबर का समय दिया है। उस दिन शाम साढ़े चार बजे वह दिल्ली से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से शिलान्यास करेंगे। उस दौरान नगर

डिजीटल माध्यमों के जरिए किया रावण के पुतले का दहन का प्रसारण

लखनऊ, संवाददाता। असत्य पर सत्य की विजय का प्रतीक दशहरा कोविड-19 प्रोटोकाल का पालन करते हुए मनाया गया। लखनऊ समेत कई जिलों में रामलीला समितियों ने रावण दहन का प्रसारण यू ट्यूब और अन्य डिजीटल माध्यमों के जरिए किया। कोरोना संक्रमण के चलते इस साल काफी कम संख्या में रावण दहन के कार्यक्रम का आयोजन किया गया था और जहां भी रावण के पुतले जलाए गए वहां भी सीमित संख्या में दर्शकों ने रावण दहन देखा। दशहरे के अवसर पर इस साल लगने वाले मेलों की तादाद भी काफी कम रही। लोगों ने रामलीला मैदान जाने के बजाय घरों में रहना उचित समझा। लखनऊ के ऐतिहासि ऐशबाग रामलीला मैदान पर 70 फिट ऊंचे रावण के पुतले का दहन उपमुख्यमंत्री डॉ. दिनेश शर्मा की मौजूदगी में किया गया। इस साल पुतले की थीम कोरोना वायरस का दहन पर आधारित थी।

मम्मी संग बच्चे सीखेंगे कलाकारी

लखनऊ, संवाददाता। जे एंड जे प्ले एंड एक्टीविटी क्लासेस का उद्घाटन रविवार 25 अक्टूबर को दशमी के पावन अवसर पर मुख्य अतिथि, एमिटी विश्वविद्यालय के खेल अधिकारी डॉ.तरन्नुम रफीक ने किया। गांधीगिरी और देखा जो पहली बार जैसी मशहूर फिल्मों की अभिनेत्री अंजलि सिंह और बाबर, बिजनेसमैन जैसी फिल्मों के अभिनेता सुमित सागर इस समारोह के विशिष्ट अतिथि रहे। उन्होंने कहा कि जिस तरह से हर फूल की महक उसे पहचान देती है ऐसे ही भगवान ने हर इंसान को किसी न किसी कला का हुनर दिया है। आवश्यकता उस कला को पहचान कर निखारने की है। सरस्वतीपुरम हुसैनी मस्जिद के पास शुरू हुए इस सेंटर में बॉलीवुड डांस और गायन के साथ-साथ कथक का प्रशिक्षण भी केन्द्र में दिया जा रहा है। केन्द्र की प्रमुख मीनू नागर ने बताया कि सर्वांगीण विकास के लिए बच्चों को ही नहीं गृहणियों के लिए भी बहुत की कलाएं इस केन्द्र में सिखायी जा रही हैं।

तीन सट्टेबाज अरेस्ट, सट्टा डायरी मिली पुलिस खंगाल रही है सट्टेबाजों की कुंडली

लखनऊ, संवाददाता। आईपीएल में सट्टेबाजी का खेल पूरे जोर से चल रहा है। लखनऊ पुलिस ने आईपीएल मैच पर सट्टा लगाने वाले तीन लोगों को रविवार को हिरासत में लिया है। रविवार को हुए सनराइजर्स हैदराबाद और किंग्स इलेवन पंजाब के मैच में सटोरियों ने लाखों रुपए का सट्टा लगाया गया था। तीन सटोरियों के पास से पुलिस ले करीब तीन लाख रुपए, कई मोबाइल फोन और सट्टा डायरी बरामद की है। प्रभारी निरीक्षक आलमबाग प्रदीप सिंह ने बताया कि बड़ा बरहा निवासी रंजीव ठाकुर के घर सट्टेबाजी की सूचना मिलने पर लखनऊ पुलिस टीम ने छापेमारी की। मौके से रंजीव ठाकुर सहित तीन लोग गिरफ्तार किए गए। आरोपियों में रंजीव ठाकुर, राजस्थान जयपुर के राजेश ठाकुर व राकेश ठाकुर शामिल है। बताया जाता है कि तीनों रिश्तेदार हैं। राजेश व राकेश सगे भाई हैं। प्रभारी निरीक्षक प्रदीप सिंह के मुताबिक आईपीएल में शनिवार को सनराइजर्स हैदराबाद व किंग्स इलेवन पंजाब के बीच मैच था। जिसमें लाखों रुपए की बाजी लगी थी। पुलिस ने 3,03,700 रुपए, सात मोबाइल फोन, सट्टा डायरी सहित कई सामान बरामद किया। प्रभारी निरीक्षक के मुताबिक मोबाइल में कई लोगों के नाम मिले हैं जो मैच में मोटी रकम लगा रहे थे पुलिस इन सब की कुंडली खंगाल रही है।

भाजपा सरकार ने साढ़े तीन साल सपा के कामों को अपना बताने में बिता दिए

लखनऊ, संवाददाता। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा सरकार ने साढ़े तीन साल तो समाजवादी पार्टी के कामों को अपना बताने में ही बिता दिए हैं। इस काम में उन्हें न कोई संकोच है और न हीं लाज। कहने भर को भी वे अपनी एक भी योजना लागू नहीं कर सके। प्रदेश की जनता का इसी लिए भाजपा सरकार से मोहभंग हो चुका है और सत्तादल के प्रति आक्रोश बढ़ता जा रहा है। जनता की उम्मीद अब फिर समाजवादी पार्टी की सरकार बनने पर टिकी हुई हैं जिसके सत्ता में रहते हर क्षेत्र में विकास के कीर्तिमान स्थापित हुए थे। समाजवादी पार्टी की सरकार के समय इटावा में लायन सफारी का निर्माण हुआ था। अपनी शुरूआत के दिनों से ही यह पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र रहा है। लायन सफारी में जन्मे सिंबा, सुल्तान अब पर्यटको को दहाड़ते और विचरण करते हुए नजर आएगे। शेरो को निहारने का सुअवसर पर्यटकों को दीपावली पर्व के आसपास मिल सकता है। सोनभद्र में गुलरिया पहाड़ी 20वर्ष पूर्व ही उजाड़ और हरियाली विहीन हो चुकी थी। प्राकृतिक पर्यावरणीय संतुलन बिगड़ रहा था। ऐसे में समाजवादी पार्टी की सरकार के समय सन् 2016 में पौधरोपण का काम व्यापक पैमाने पर किया गया। आज पहाड़ी पर हरियाली फिर लौट आई है। यहां 145 हेक्टेयर क्षेत्र में आकेशिया, चिलबिल, कांजी, सागौन, शीशम, सेमिया, खैर के पेड़ लगाए गए थे। मेड़ो पर बबूल के बीज बोए गए। अब इस पहाड़ी पर लगे पौधे 4 से 8 फिट तक बड़े हो गए है। बुंदेलखंड में समाजवादी सरकार ने 5 करोड़ पौधे लगाकर एक रिकार्ड कायम किया था। समाजवादी सरकार के समय विश्वस्तरीय खेलों के लिए इकाना स्टेडियम बना जिसके नजदीक आधुनिक बाजार शाने अवध का निर्माण हुआ था जिसे भाजपा सरकार ने औने-पौने दामों में बेच दिया।

मायावती की लोगों से अपील, विरोधियों के हथकंडों और षडयंत्रों से रहें सावधान

लखनऊ, संवाददाता। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की अध्यक्ष और उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने सोमवार को बिहार विधानसभा चुनाव को लेकर वहां के लोगों को विरोधियों के सभी प्रकार के हथकंडों और षडयंत्रों से सावधान किया है। मायावती ने सोमवार को ट्वीट किया, बिहार विधानसभा चुनाव के पहले चरण के मतदान की तैयारी आज चुनाव प्रचार की समाप्ति के साथ ही शुरू। अतः सभी से अपील है कि वे विरोधियों के सभी प्रकार कि हथकंडों और षडयंत्रों से सावधानी बरतते हुए बसपा और आरएलएसपी आदि गठबंधन को ही अपना वोट देकर सफल बनाएं। उल्लेखनीय है कि बिहार विधानसभा चुनाव में बसपा ने राष्ट्रीय लोक समता पार्टी (रालोसपा) समेत कई दलों से गठबंधन करके तीसरा मोर्चा बनाया है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि बिहार के कुछ खास क्षेत्रों में पिछड़ी जाति में रालोसपा का प्रभाव है, जबकि दलितों में बसपा की पकड़ का दावा किया जाता है। रालोसपा के उत्तर प्रदेश अध्यक्ष अमित कुशवाहा ने बताया, शिबहार में हमारी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष उपेंद्र कुशवाहा ने बसपा को गठबंधन में 80 सीटें दी हैं। वहां पहले चरण में बसपा के 26 उम्मीदवार चुनाव मैदान में हैं। बिहार चुनाव में गया का प्रभार संभाल रहे अमित का कहना है, बिहार में सरकार बनाने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका रालोसपा-बसपा गठबंधन की होगी।

कोरोना को मात देकर घर लौटे मुलायम सिंह यादव

लखनऊ, संवाददाता। समाजवादी पार्टी के संरक्षक मुलायम सिंह यादव कोरोना को मात देकर रविवार को अस्पताल से डिस्चार्ज हो गए। जिसके बाद मुलायम स्वस्थ होकर लखनऊ पहुंच गए हैं। इस बात की जानकारी खुद उनके बेटे एवं सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने दी। अखिलेश ने ट्वीट किया कि माननीय नेताजी स्वस्थ होकर घर आ गये हैं और कुछ दिन घर पर ही रहकर स्वास्थ्य लाभ करेंगे। बता दें कि 14 अक्टूबर को सपा संरक्षक मुलायम सिंह यादव कोरोना वायरस की चपेट में आ गए थे। जिसके बाद उनको गुरुग्राम के मेदांता अस्पताल में भर्ती कराया गया। अब वह डिस्चार्ज होने के बाद लखनऊ लौट आए हैं, लेकिन मुलायम सिंह यूपी में होने वाले विधानसभा उपचुनाव में पार्टी के प्रत्याशियों का प्रचार नहीं कर सकेंगे।

मुख्यमंत्री कानून व्यवस्था और सुशासन की झूठी डींगे हांकने में लगे: माकपा

लखनऊ, संवाददाता। भारत की कम्युनिस्ट पार्टी मार्क्सवादी उत्तर प्रदेश राज्य सचिव मंडल ने एक प्रेस बयान जारी कर कहा है कि भाजपा सरकार प्रदेश में बढ़ती जा रही छेड़खानी बलात्कार और हत्या जैसी जघन्य घटनाओं पर अंकुश नहीं लगा पा रही है। बलात्कारी हत्यारे निर्भय होकर घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं। पूरा प्रदेश शर्मसार है किंतु मुख्यमंत्री कानून व्यवस्था और सुशासन की झूठी डींगे हांकने में लगे हैं। छेड़छाड़ का विरोध करने पर 23 अक्टूबर को फिरोजाबाद में दलित लड़की की हत्या उसके घर में घुसकर कर दी गई, जालौन में सामूहिक बलात्कार की घटना हुई, मऊ में छेड़खानी का विरोध करने पर लड़की को छत से फेंक दिया गया, बांदा में रामलीला देख कर लौट रही लड़की के साथ बलात्कार किया गया। इस तरह की घटनाएं प्रतिदिन पूरे प्रदेश में हो रही है। ऐसा लगता है सरकार ने बलात्कारियों और हत्यारों को अभय दान दे रखा है। फिरोजाबाद में भारत की कम्युनिस्ट पार्टी मार्क्सवादी स्थानीय इकाई की एक टीम मारी गई लड़की के परिवार जनों से मुलाकात कर उन्हें न्याय दिलाने और हत्यारों को कठोर दंड दिलवाने के लिए संघर्ष करने का ऐलान किया है। भारत की कम्युनिस्ट पार्टी मार्क्सवादी राज्य कमेटी के आवाहन पर पूरे प्रदेश में ध्वस्त हो चुकी कानून व्यवस्था और जंगलराज के खिलाफ अभियान चलाया जा रहा है। सचिव मंडल ने कहा है मुख्यमंत्री प्रदेश में महिलाओं की सुरक्षा करने में असफल हो रहे हैं। प्रदेश में बढ़ते जघन्य अपराधों से स्पष्ट है कि कानून व्यवस्था उनके हाथ से निकल चुकी है और इसलिए वे अपने पद पर बने रहे।

मुख्य सचिव की अध्यक्षता में कोविड-19 संबंधी समीक्षा बैठक आयोजित

त्यौहारों के दृष्टिगत अत्यधिक सतर्कता की आवश्यकता: मुख्य सचिव

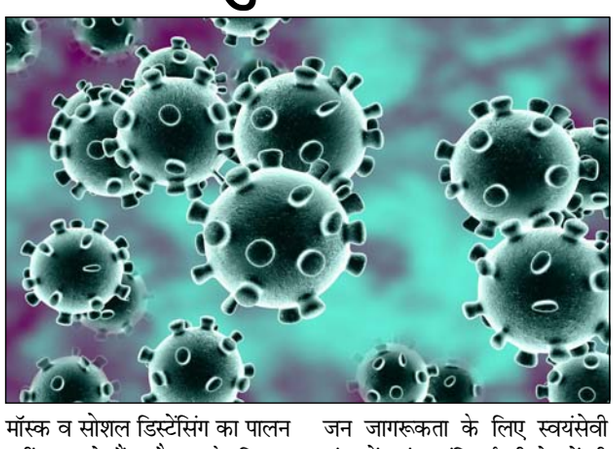

लखनऊ, संवाददाता। मुख्य सचिव राजेन्द्र कुमार तिवारी ने वीडियोकान्फ्रेन्सिंग के माध्यम से कोविड-19 के संबंध में समीक्षा बैठक की। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि कोरोना का संक्रमण कम हुआ है खत्म नहीं, अतः त्यौहोरों के दौरान धार्मिक स्थलों एवं भीड़भाड़ वाले स्थानों में विशेष सतर्कता बरतने की जरूरत है तथा मॉस्क पहनने व सोशल डिस्टेंसिंग के अनुपालन के लिए सख्ती की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि जिन स्थानों पर सीसीटीवी कैमरे लगे हैं, वहाँ सीसीटीवी फुटेज तथा जहाँ सीसीटीवी कैमरे स्थापित नहीं हैं, ऐसे भीड़भाड़ वाले इलाकों की मॉनीटरिंग वीडियोग्राफी कराकर की जाये। उन्होंने कहा कि सीसीटीवी की फुटेज व वीडियोग्राफी की रिकार्डिंग से ऐसे व्यक्तियों की पहचान की जाये जोकि मॉस्क व सोशल डिस्टेंसिंग का पालन नहीं कर रहे हैं, और उनके विरूद्ध सख्त कार्यवाही की जाये। उन्होंने कहा कि मॉस्क पहनने व सोशल डिस्टेंसिंग के प्रति जन सामान्य को जागरूक करने के लिए भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों तथा धार्मिक स्थलों के आसपास लाउडस्पीकरों के माध्यम से प्रसारण कराया जाये। इसके अतिरिक्त जन जागरूकता के लिए स्वयंसेवी संगठनों एवं वालंटियर्स की सेवायें भी ली जा सकती हैं। इससे पूर्व बैठक में बताया गया पिछले 24 घण्टों में 2052 पॉजिटिव केस मिले हैं, 2368 को डिस्चार्ज किया गया है, 28 व्यक्तियों की मृत्यु हुई है। वर्तमान में कुल 27317 एक्टिव केस हैं, जिनका इलाज किया जा रहा है।

गुड़ खाकर गुलगुलो से परहेज कर रहा निर्वाचन आयोग

यूपी के एमएलसी चुनाव में करोना, बिहार उपचुनाव कोरोना मुक्तः हरिकिशोर तिवारी

लखनऊ, संवाददाता। आगरा खण्ड स्नातक से एमएलसी पद के प्रत्याशी और राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद के अध्यक्ष इं. हरिकिशोर तिवारी ने उत्तर प्रदेश की 11 रिक्त विधानपरिषद की सीटों पर होने वाले चुनाव में देरी के लिए शासन और निर्वाचन आयोग को जिम्मेदार ठहराया है। उनका कहना है कि उत्तर प्रदेश के विधानपरिषद चुनाव में निर्वाचन आयोग की भूमिका गुड खाकर गुलगुलों से परहेज करनी जैसी है। उनका कहना कि एक तरफ निर्वाचन आयोग 25 सितम्बर को बिहार की 243 विधानसभा और 29 सितम्बर 2020 को देश की 56 विधानसभा और एक लोकसभा सीट के उप चुनाव की इस भीषण कोरोना संक्रमण के दौरान चुनाव की तिथि घोषित करने में देर नही करता वही दूसरी तरफ उत्तर प्रदेश के उच्चधिकारियों द्वारा कोरोना का भय दिखा व्यवस्था न करने के पत्र मिलते ही 5 मई 2020 को अपना कार्यकाल खत्म कर चुकी 11 विधानपरिषद की सीटों के चुनाव की तिथि लगातार आगे बढ़ा रहा है। मजेदार बॉत यह कि जबकि निर्वाचन आयोग 30 जून 2020 यानि यूपी के विधानपरिषद सदस्यों के कार्यकाल के एक माह बाद समाप्त होने वाले कर्नाटक की चार विधान परिषद सीटों और बिहार की चार स्नातक और चार शिक्षक विधायक सीटों के लिए चुनाव की तिथि घोषित कर चुका है। इस सम्बंध में औचित्य का प्रश्न उठाते हुए एवं निर्वाचन आयोग की संदिग्ध भूमिका के मद्देनजर आगरा स्नातक खण्ड एमएलसी चुनाव के प्रत्याशी इं. हरिकिशोर तिवारी, शिक्षक महेन्द्र नाथ और आकाश अग्रवाल ने याचिका दाखिल कर दी है। इसके लिए 2 नवम्बर 2020 को सुनवाई होनी है। उत्तर प्रदेश की 11 विधानपरिषद सीटों के चुनाव के लिए घोषित होने वाली तिथियों को लेकर बार बार संशय खड़े किए जाने से नाराज इं. हरिकिशोर तिवारी ने कहा कि एक तरफ जहॉ कोरोना संक्रमण को लेकर उत्तर प्रदेश सरकार की तरफ से प्रदेश की 11विधान परिषद सीटों के चुनाव में व्यवस्था न करने की बॉत की जा रही है।

हर घर में एक शस्त्र होने की जरूरतः हिन्दू महासभा

लखनऊ, संवाददाता। अखिल भारत हिन्दू महासभा, उत्तर प्रदेश इकाई के अध्यक्ष ऋषि त्रिवेदी ने यहां पार्टी के प्रदेश कैम्प कार्यालय, कुर्सी रोड में विजयादशमी पर्व के मौके पर हुयी शस्त्र पूजन के मौके पर कहा कि देश की मौजूदा परिस्थितियों को देखते हुये परिवार की सुरक्षा के लिये हर घर एक शस्त्र का होना अब बहुत जरूरी हो गया है। उन्होंने पार्टी के पदाधिकारियों और कार्यकर्ता को सम्बोधित करते हुये आह्वान किया कि प्रत्येक हिन्दू परिवारों जिनके पास शस्त्र नहीं है, उन्हें कम से कम एक शस्त्र घरों में रखने की आवश्यकता है। इसके लिये पार्टी ऐसे हिन्दू परिवारों को जागरूक और प्रेरित करेगी कि वह शस्त्र लाईसेन्स के लिये आवेदन करें, और इसके लिये हिन्दू महासभा शस्त्र लाईसेन्स दिलवाने में पूरी मदद करेगी। वहीं इसके साथ ही श्री त्रिवेदी ने उन तमाम हिन्दूवादी संगठनों से भी अपील की है कि अब समय सिर्फ शस्त्र पूजन तक नहीं रह गया है, बल्कि हिन्दुओं के हर परिवारों में एक शस्त्र उपलब्ध कराने के लिये लोगों को जागरूकता और प्रेरित करने का काम करें।

मोहनलालगंज पुलिस ने आईपीएल में सट्टा लगा रहे 6 आरोपी को किया गिरफ्तार

लखनऊ, संवाददाता। मोहनलालगंज पुलिस ने आईपीएल मैच में सट्टा लगा रहे 6 लोगों को गिरफ्तार कर उनके पास से 90 हजार रुपये व 5 फोन बरामद किए है। साथ ही सट्टा लगा रहे लोगों की लिस्ट भी बरामद की है। इंस्पेक्टर जीडी शुक्ला ने बताया कि डेहवा में रहने वाले नवीन सैनी के घर पर आईपीएल मैच में सट्टा लगाया जा रहा था। रविवार की देर शाम मुंबई इंडियन व राजस्थान रॉयल्स के बीच चल रहे मैच में सट्टा लगाया जा रहा था। ग्रामीणों ने बताया कि आईपीएल मैच के दौरान रोज सट्टा लगाया जा रहा था। रात्रि लगभग 9रू30 पुलिस ने छापेमारी करके आरोपियों को दबोच लिया। इंस्पेक्टर ने बताया कि पकड़े गए आरोपियों की पहचान डेहवा में रहने वाले नवीन सैनी, अंकुर कुमार, धनवारा में रहने वाले सौरभ सिंह, कुशली खेड़ा में रहने वाले आलोक कुमार, हुलासखेड़ा में रहने वाले रामकृपाल व दिलीप कुमार के रुप मे हुई है। पुलिस को मौके पर 90 हजार रूपये व 5 मोबाइल फोन बरामद हुए है। जिन पर आईपीएल मैच देखा जा रहा था। साथ ही कागज की 6 पर्चियां भी बरामद हुई है जिसपर सट्टा खेल रहे लोगो की जानकारी लिखी हुई है। इंस्पेक्टर ने बताया कि पूछताछ में सामने आया है कि आरोपी आलोक कुमार व सौरभ सिंह सट्टा खिलवाते है। जो नवीन के घर पर खेला जा रहा था। पुलिस ने सोमवार को छह आरोपियों को जेल भेज दिया।

झाड़ियों में मिला महिला की हत्या कर फेंका गया शव

लखनऊ, संवाददाता। लखनऊ के काकोरी बेहटा गांव में सोमवार तड़के महिला (40) का हत्या कर फेंका गया शव झाड़ियों से मिला। महिला के शरीर पर गहरी चोट के निशान हैं। ग्रामीण रेप के बाद हत्या किए जाने का अंदेशा जता रहे हैं। एसीपी काकोरी सै. कासिम अहमद ने बताया कि बेहटा स्थित राधा कृष्ण मंदिर के पास मिले शव की शिनाख्त कराने की कोशिश की जा रही है। महिला के शरीर पर लाल रंग का कुर्ता और काली लैगिंग मौजूद है। हाथ में कलावा बंधा हुआ है। इसके अलावा पहचान का कोई चिह्न मौजूद नहीं है। शिनाख्त के लिए आस-पास के जिलों में सम्पर्क कर गुमशुदा महिलाओं के बारे में जानकारी मांगी गई है। साथ ही बेहटा, नरायनपुर,सहित आसपास के गांवों में जाकर महिला के बारे में पता किया जा रहा है। सोमवार तड़के शव मिलने के बाद जांच के लिए फोरेंसिक टीम को बुलाया गया था।डॉग स्कवाड भी मौके पर आया था। ग्रामीणों के मुताबिक डॉग शव के आस-पास ही काफी देर तक घूमता रहा।एसीपी काकोरी के मुताबिक शव को 72 घंटे के लिए पोस्टमार्टम हाउस में रखा जाएगा। इस बीच शिनाख्त कराने के प्रयास पुलिस करेगी।

51 शक्तिपीठ में सौ से अधिक कन्याओं को बैठाकर करवाया गया भोग

लखनऊ, संवाददाता। नन्दना बीकेटी स्थित 51 शक्तिपीठ में शारदीय नवरात्र महोत्सव में रविवार को नवमी के अवसर पर सामूहिक कन्या भोग का आयोजन किया गया। इसमें सौ से अधिक कन्याओं को परंपरा के अनुसार बैठकर उनका पूजन-अर्चन कर उन्हें भोग अर्पित किया गया। भक्त गण नवमी के अवसर पर सुबह से ही मंदिर में जुटने लगे थे। शाम को सतरंगी रोशनी से जगमग मंदिर की शोभा देखते ही बनी। दिन भर कन्या स्वरूपा बेटियों का पूजन अर्चन भी मंदिर परिसर में जारी रहा। आशीष सेवा यज्ञ न्यास के अध्यक्ष रघुराज दीक्षित और तृप्ति तिवारी के संचालन में कन्याओं को मास्क भी बांटे गए। मन्दिर के प्रवक्ता अजय अरोड़ा ने बताया कि 51 शक्तिपीठ तीर्थ के फेसबुक लिंक के माध्यम से देश-विदेश के हजारों भक्तों को जोड़ा जा रहा है। नवरात्र उत्सव में वहां प्रतिदिन पिंडी पूजन आचार्य धनंजय पाण्डेय द्वारा षोड्सोपचार विधि से करवाया गया।

भाजपा करेगी सभी वादे पूरे: कमलेश पासवान

डॉ0 सत्यप्रकाश मणि त्रिपाठी ईमानदार व जुझारू: डॉ0 धर्मेन्द्र सिंह

गोरखपुर/बांसगांव लोकसभा के सांसद कमलेश पासवान और भाजपा क्षेत्रीय अध्यक्ष धर्मेंद्र सिंह ने देवरिया सदर विधानसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी डॉ सत्यप्रकाश मणि त्रिपाठी के पक्ष में जनसंपर्क किया। सांसद कमलेश पासवान और धर्मेन्द्र सिंह ने गौरी बाजार विकासखंड के पथरहट,असनहर,सांडा,कालाबन,भटौली खुर्द सहित अनेक गांवों में पहुंच कर देवरिया सदर भाजपा प्रत्याशी डॉ सत्यप्रकाश मणि त्रिपाठी के समर्थन में जनसंपर्क किया। इस अवसर पर कमलेश पासवान ने पर्चे बांटे और कहा कि मोदी और योगी जी ने जो काम किया है वो सराहनीय है। योगी जी ने जो उत्तर प्रदेश के विकास किया है अभी तक ऐसा विकास किसी के द्वारा नहीं किया गया है मोदी और योगी जी द्वारा भाजपा उत्तर प्रदेश में सभी वादे पूरा करेगी और भाजपा के छेत्रिय अध्यक्ष ने कहा कि डा0 सत्यप्रकाश मणि त्रिपाठी भाजपा के ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ जुझारू नेता हैं इनको जीत जाने पर देवरिया सदर विधानसभा क्षेत्र में विकास की गंगा बहने लगेगी। तभी क्षेत्र का विकास संभव है। इस अवसर पर देवरिया जिला उपाध्यक्ष संजय सिंह,ब्लाक प्रमुख सुनील पासवान, मंडल अध्यक्ष बृजेश सिंह, सुनील निषाद, कर्मवीर सोलंकी, वैभव सिंह, ग्राम प्रधान राजेश सिंह, राजकिशोर सिंह, संजय सिंह, सेक्टर संयोजक रामभगत सिंह,बूथ अध्यक्ष सोनू पांडेय,राजू सिंह, दयानंद सिंह,सत्यव्रत पांडेय,ब्रह्मा यादव, वैभव सिंह, जेपी प्रजापति,अनुपम सिंह,श्याम सोलंकी, राजेन्द्र प्रताप सिंह,देवेन्दु, ओपी यादव, पप्पू यादव, सांसद मीडिया प्रभारी संतोष श्रीवास्तव सहित अन्य लोग सोसल डिस्टेंस का पालन करते हुए उपस्थित रहे।

गोरखपुर में चल रही थी रेल टिकटों की कालाबाजारी विजिलेंस टीम ने किया खुलासा

गोरखपुर/जिले में रेलवे विजिलेंस टीम ने रविवार को एक प्रतिष्ठान में छापामारी कर टिकटों की कालाबाजारी का खुलासा किया। चिलुआताल थाना क्षेत्र के मजनू पुलिस चौकी अंतर्गत डोहरिया बाजार में सिद्धत ब्राइट ट्रेवल्स एंड इफॉमेशन सेंटर में छापामारी की गई, जिसमें रेलवे के 24 ई टिकट, 18 एटीएम कार्ड सहित 21हजार रूपये बरामद किया गया। मिली जानकारी के अनुसार, मोहम्मद जाफर पुत्र मैनुद्दीन डोहरिया बाजार में लगभग दो-तीन साल से ब्राइट ट्रेवल्स एंड इंफॉर्मेशन सेंटर के नाम से दुकान चलाता है। मुखबीर द्वारा सूचना दी गई थी कि डोहरिया बाजार में रेलवे ई टिकट का कारोबार रेलवे का साइट हैंग कर धड़ल्ले से किया जा रहा है। जानकारी मिलने पर रविवार को पहुंची विजिलेंस की टीम ने छापामारी की। छापामारी में प्रतिबंधित यूजर आईडी का प्रयोग करते हुए पाया गया है। वह जरूरतमंदों को रेलवे ई टिकट 500 या 1000 रुपये या इससे ज्यादा देने पर आसानी से उपलब्ध कराता था। रविवार को विजिलेंस टीम द्वारा छापा मारकर दुकानदार को गिरफ्तार कर लिया गया। छापेमारी में विजिलेंस इंस्पेक्टर देवेंद्र प्रताप सिंह, स्पेक्टर नेता राम सहित उनकी टीम के सदस्य मौजूद रहे।

जागरण में माता की भेटें सुन झूमे भक्त

दुबौलिया। बैरागल पूरेउपाध्याय में हुए माता रानी के जागरण में भक्त जमकर झूमे। मुरादाबाद से आई विक्की जागरण मंच की टीम के कलाकारों ने अपनी मनमोहक प्रस्तुति से सभी भक्तों का दिल जीत लिया। जागरण का शुभारंभ सामज सेवी ई.वीरेंद्र मिश्रा ने दीपप्रज्वलन कर किया। इसके बाद सभी भक्तों की अरदास लगाई गई। अरदास के बाद सर्वप्रथम माता रानी की आरती, मां सरस्वती की आराधना की गई। कार्यक्रम के बाद माता के सुंदर सुंदर भजनों का सिलसिला शुरू हुआ। गायक कलाकारों ने प्यारा सजा है तेरा द्वार भवानी, भक्तों की लगी है कतार भवानी। चलो बुलावा आया है माता ने बुलाया है। शेर पर सवार होके आजा शेरोवलिये, बेटा बुलाए फौरन दौड़ी चली आये मां, जैसे सुंदर भजनों की प्रस्तुति से जागरण के माहौल को भक्तिमय कर दिया। भक्त भक्ति में लीन होकर माता के भजनों पर नृत्य करने लगे। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि ओम प्रकाश ओझा ने कहा कि मनुष्य को अपनी दैनिक कार्यो से समय निकालकर भगवान की भक्ति में भी समय लगाना चाहिए, इसी से उसके जीवन का कल्याण संभव है। कार्यक्रम के अंत मे माता की आरती करके प्रसाद वितरण किया गया।

गोरखपुर शहर को प्रतिमा विसर्जन को लेकर 11 जोन और 33 सेक्टर में बांटा गया है

गोरखपुर/प्रतिमा विसर्जन को लेकर भारी सुरक्षा व्यवस्था किया गया है। राजघाट डोमिनगढ़ और महेसरा में पुख्ता व्यापक इंतजाम किए गए हैं। मूर्ति ले जाने वाले मार्ग पर चप्पे-चप्पे पर पुलिस बल की ड्यूटी लगी है। सुरक्षा की दृष्टि से सर कोई 11 जोन 33 सेक्टर में बाटा गया है। इसके अलावा 12 चिन्हित स्थानों पर सीसीटीवी और डोंन कैमरा से भी निगरानी की जा रही है। कोविड-19 प्रोटोकॉल का पुलिस सख्ती से पालन करा रही है। रविवार रात से ही दुर्गा प्रतिमा का विसर्जन शुरू हो गया है। सभी मूर्तियां निर्धारित मार्ग से होकर ही जाए इसको लेकर पुलिस ने पहले से ही तैयारी कर रखी है। मूर्ति विसर्जन के दौरान सुरक्षा व्यवस्था में 5 अपर पुलिस अधीक्षक, 5 सीओ, 15 थानेदार समेत 400 सिपाही और होमगार्ड की ड्यूटी लगी है। राजघाट, डोमिनगढ़ और महेसरा में प्रतिमा विसर्जन के लिए चिन्हित किया गया स्थान पर सीसीटीवी कैमरे लगे हैं। इसके अलावा पुलिस डोन कैमरे से भी निगरानी कर रही है। किसी भी विपरित परिस्थिति से निपटने के लिए क्यूआरटी का गठन किया गया है। यह टीम सूचना मिलने पर तत्काल मौके पर पहुंचकर स्थिति को नियंत्रण में करेगी। महिला पुलिस की टोली का भी अलग से गठन किया गया है।

चन्द्रगुप्त महिला महाविद्यालय में सुरक्षा से जुडे मद्दों पर चर्चा

बनकटी। मथौली स्थित चन्द्रगुप्त मौर्य प्रभावंश महिला महाविद्यालय में सरकार द्वारा चलाए जा रहे महिलाओं की सुरक्षा हेतु मिशन शक्ति अभियान के अंतर्गत जूम वेबिनार के माध्यम से छात्राओं को महिला सुरक्षा से सम्बंधित कानूनों की जानकारी दी गयी। प्रबन्धक डॉ अनिल कुमार मौर्य ने आधुनिक समाज में महिलाओं के साथ हो रहे भेदभाव पर गहरा दुख प्रकट करते हुए कहा कि किसी भी सभ्य समाज में महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों को बर्दाश्त नहीं किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि इस पर विमर्श अत्यंत आवश्यक है। प्राचार्य डॉ अनिता मौर्य ने महिला सुरक्षा हेतु सरकार द्वारा बनाये गए कानूनों की विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि महिलाओं को अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ जागरूक होने की आवश्यकता है। कार्यक्रम के प्रमुख वक्ता विवेकानंद शुक्ल ने छात्राओं को महिला सुरक्षा से सम्बंधित केंद्र और राज्य सरकार द्वारा चलाये जा रहे विधिक प्रयासों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डालते हुए कहा कि समाज में कहीं भी महिलाओं पर अत्याचार हो तो वे एक जागरूक नागरिक की तरह आवाज उठाना सीखें। इस अवसर पर डॉ सुनील कुमार, श्रीमती सरोज मौर्य विजय कुमार यादव, सुधीर मोहन त्रिपाठी, ज्योति पाल, श्रृंखला पाल, नीलम गुप्ता और श्रेया ने भी छात्राओं को जानकारी मुहैया कराई।

गोरखपुर में प्याज के स्टाक को कब्जे में लेगा जिला प्रशासन, जमाखोरी पर लगेगा अंकुश

गोरखपुर/ प्याज की तेजी से बढ़ती कीमतों ने आम आदमी को परेशान कर दिया है। पुराने रेट पर मंगाई गई प्याज को स्टाक कर बढ़े दर पर बेचा जा रहा है। और जमकर मुनाफाखोरी हो रही है। प्याज का दाम पिछले 1 महीने में करीब 40 रूपये से तक बढ़ चुका है। जिला प्रशासन इस मामले में सख्त रुख अपनाने जा रहा है। जिलाधिकारी के विजेंद्र पांडियन ने कहा कि प्याज की कीमत बढ़ रही है। 31 अक्टूबर 2020 तक इंतजार किया जाएगा, यदि कीमत नियंत्रण नहीं हुई तो एसेंशियल कमोडिटी एक्ट लागू किया जाएगा और स्टाक अपने कब्जे में लेकर प्रशासन दाम नियंत्रित करेगा। लॉकडाउन की तर्ज पर दुकानें लगा कर सस्ते रेट पर बिक्री भी की जा सकती है। थोक मंडी में प्याज 55 रूपये से लेकर 65 रूपये प्रति किलो की दर से बिक रहा है। फुटकर बाजार में यह प्याज की कीमत 80 रूपये प्रति किलो तक है। दाम बढ़ने के पीछे व्यापारियों का तर्क है की दक्षिण भारत में हुई बरसात के कारण नई फसल नहीं आ सकी है और कुछ स्थानों पर फसल लेट हो चुकी है। ऐसी स्थिति में प्याज के दाम बढ़ रहे हैं। जबकि दाम बढ़ने का एक पहलू जमाखोरी से भी जुड़ा है।थोक मंडी में कुछ व्यापारियों ने बड़ी मात्रा में प्याज का स्टाक कर रखा है। अपनी दुकान के साथ ही कुछ और दुकानों में माल भरा गया है। व्यापारियों के घरों में भी प्याज का स्टाफ है। क्षेत्र में चर्चा है कि यह प्याज 32 रूपये से लेकर 36 रूपये प्रति किलो तक खरीदी गई है और इसे 65 रुपये प्रति किलो तक बेचा जा रहा है। बिक्री अधिक रेट पर हो रही है। इस समय नासिक में भी प्याज के दाम बढ़े हैं, और इसी को आधार बनाकर यहां भी पुराना स्टाक नए रेट पर बेचकर जबरदस्त लाभ कमाया जा रहा है। रविवार तक प्याज 40 रूपये से लेकर 45 रूपये प्रति किलो तक बिका था। वही सोमवार को मार्केट में प्याज 80 रूपये प्रति किलो के हिसाब से बिक रहा है। व्यापारियों की माने तो दाम में उछाल के कारण प्याज की मांग में कमी भी आई है। प्याज की जमाखोरी की जांच के लिए जिला प्रशासन की ओर से जांच टीम लगाई गई है। पर अभी तक टीम को इस तरह का कोई मामला नहीं मिला है, थोक मंडी में जमाखोरी की चर्चा आम है लेकिन जमाखोरी करने वाले जांच टीमों के हाथ नहीं आ सके हैं। जिलाधिकारी के विजेंद्र पांडियन ने बताया कि प्याज की आवक कम होने से दिक्कत आ रही है। यदि आम नागरिक के पास भी जमाखोरी की सूचना हो तो वे बता सकते हैं, जमाखोरी करने वालों पर शिकंजा कसा जाएगा। जांच के लिए टीमें लगाई गई हैं।

शासन द्वारा सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग की स्थापना के लिए नियमावली को किया गया सरलीकृत

उद्यमी को उद्योग स्थापना के लिए 72 घण्टे के भीतर जारी होगा एनओसी प्रमाण पत्र: जिलाधिकारी

बस्ती। उद्यमी को उद्योग स्थापना के लिए 72 घण्टे के भीतर एनओसी/प्रमाण पत्र जारी कर दिया जायेंगा। इस संबंध में जानकारी देते हुए जिलाधिकारी आशुतोष निरंजन ने बताया कि उ0प्र0 शासन द्वारा सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग की स्थापना के लिए नियमावली को संशोधित करते हुए सरलीकृत कर दिया गया है। इसके अनुसार अब 72 घण्टे के भीतर उद्यमी को एनओसी/प्रमाण पत्र प्राप्त हो जायेंगा। उन्होने बताया कि उद्यमी नया उद्योग लगाने, विस्तार करने तथा विविधीकरण के लिए अपना आवेदन पत्र जिला उद्योग केन्द्र में प्रस्तुत करेंगे। इसके साथ वे घोषणा पत्र एवं आवश्यक सभी प्रपत्र जमा करेंगे। उद्यमी से प्राप्त प्रार्थना पत्र, उपायुक्त उद्योग एनओसी प्राप्त करने के लिए राजस्व, विद्युत, अग्निशमन, प्रदूषण नियंत्रण, श्रम विभाग, विकास प्राधिकरण एवं खाद्य विभाग को ई-मेल अथवा व्हाट्सएप से भेजेंगे तथा अविलम्ब संबंधित विभागों को भौतिक रूप से भी प्राप्त करायेंगे।

जिलाधिकारी ने बताया कि यह विभागों की जिम्मेदारी होंगी कि वे 48 घण्टे के भीतर प्राप्त प्रार्थना पत्र के संबंध में अपनी एनओसी उपायुक्त उद्योग को उपलब्ध करायेंगे। उपायुक्त उद्योग जिलाधिकारी की अध्यक्षता में जिला स्तरीय समिति की बैठक आयोजित कराकर अगले 24 घण्टे के भीतर उद्योग स्थापना के लिए एनओसी/प्रमाण पत्र जारी करायेंगे।

उल्लेखनीय है कि कोविड-19 के कारण लाकडाउन की अवधि में तथा उसके बाद की परिस्थिति में उद्योगों की स्थापना में उद्यमियों को सहूलियत देने के लिए उ0प्र0 शासन द्वारा उ0प्र0 सूक्ष्म, लधु एवं मध्यम उद्यम (स्थापना एवं संचालन सरलीकरण) अधिनियम 2020 का क्रियान्वयन किया है। इससे सूक्ष्म, लधु एंव मध्यम उद्योगों की स्थापना में तेजी आयेंगी। उद्यमियों को सरलीकृत व्यवस्था के तहत उद्योग स्थापना को बल मिलेगा तथा प्रदेश की अर्थ व्यवस्था सुदृढ होंगी।

राज्य मंत्री ने नवनिर्मित जिला जेल एवं कोविड 19 एल-2 अस्पताल का किया निरीक्षण

संतकबीर नगर। राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) स्टाम्प तथा न्यायालय शुल्क एवं पंजीयन विभाग उ0प्र0 रवीन्द्र जायसवाल द्वारा एक दिवसीय जनपद भ्रमण कार्यक्रम के अन्तर्गत निरीक्षण भवन पार्टी के पदाधिकारियों के साथ बैठक की तदुपरान्त नवनिर्मित जिला जेल एवं कोविड-19 एल-2 अस्पताल का निरीक्षण किया। जेल के कार्य को पूर्ण कराये एवं कैदियों जल्द ही शिफ्ट कराये जाने के निर्देश उनके द्वारा दिये गये।

निरीक्षण के उपरान्त राज्यमंत्री द्वारा कलेक्ट्रेट सभागार में विभागीय अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की। जिले में कानून व्यवस्था की समीक्षा के दौरान उन्होंने पुलिस अधीक्षक को निर्देश दिये कि थाने के आस-पास विना वजह घूम रहें विचैलियों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाए। उन्होंने कहा कि पुलिस जनता की मित्र है। पुलिस अधीक्षक को निर्देशित करते हुए कहा कि फरियादियों के प्रति पुलिस अफसरों का व्यवहार सही हो सरकार की मंशा के अनुरूप फरियादियों की समस्याओं का निस्तारण तत्काल किया जाए। मिशन शक्ति के अन्तर्गत सभी थानों में महिला पुलिसकर्मियों की तैनाती की जाए। जिससे महिला के विरूद्ध हो रहें अत्याचारों के विरूद्ध प्रभावी रूप से कार्यवाही की सकें।

स्वच्छ भारत मिशन की समीक्षा के दौरान जनपद में बने शौचालयों के निर्माण की प्रगति की जानकारी डी0पी0आर0ओ0 से ली गयी। जिला पंचायत राज अधिकारी को निर्माण के संबंध में आवश्यक निर्देश भी दिये गये।

निराश्रित पशुओं का सर्वे कराकर सरकार द्वारा निर्मित गोवंश आश्रय स्थलों पर पहुचाये जाने के निर्देश राज्यमंत्री जी द्वारा दिये गये। उन्होंने कहा कि पशुओं का टीकाकरण माह नवम्बर से पहले ही पूर्ण करा लिया जाए।राज्यमंत्री जी द्वारा जनपद में आवास की स्थिति, आयुष्मान भारत, पेंशन योजनाओं, एन0आर0एल0एम0, बेसिक शिक्षा, पेयजल योजनाओं, आदि की समीक्षा विभागीय अधिकारियों से की तथा सरकार की योजनाओं का सही लाभ गरीबों को उपलब्ध कराये जाने के भी निर्देश दिये।

उन्होंने कहा कि स्टाम्प पंजीयन द्वारा 10 हजार लोगों को रोजगार मुहैया कराया जाएगा। उन्होंने उपस्थित अधिकारियों को सरकार की मंशा के अनुरूप अपने कर्तव्यों का पालन करने की नसीहत दी। उन्होंने यह भी चेतावनी दी की यदि कोई भी अधिकारी/कर्मचारी भ्रष्टाचार में लिप्त पाया जाता है तो उसके विरूद्ध शासन द्वारा कठोर कार्यवाही की जाएगी। इस अवसर पर मा0 विधायक सदर दिग्विजय नारायण, जय चैबे, जिलाधिकारी दिव्या मित्तल, मुख्य विकास अधिकारी अतुल मिश्र, पुलिस अधीक्षक ब्रजेश सिंह, जिला अर्थ एवं सख्याधिकारी नागेन्द्र सिंह सहित आदि जनपदस्तरीय अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

भाजपा नगर विधायक मिले कोरोना पॉज़िटिव, सीएम योगी आदित्यनाथ के कार्यक्रम में भी लिए थे हिस्सा

गोरखपुर/ गोरखपुर में लगाता कोरोना संक्रमण के मरीज मिल रहे हैं। इसी क्रम में आज भाजपा के नगर विधायक डॉक्टर राधा मोहन दास अग्रवाल सोमवार की

देर शाम कोरोना पॉज़िटिव पाए गए हैं। डॉक्टर अग्रवाल पिछले कई दिनों से बिहार में पार्टी का चुनाव प्रचार कर रहे थे। वह रविवार को ही गोरखपुर लौटे हैं। नगर विधायक डॉक्टर राधा मोहन दास अग्रवाल ने रविवार को गोरखनाथ मंदिर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के एक कार्यक्रम में भी हिस्सा लिए थे।

नौतनवा चित्रगुप्त मंदिर में अखण्ड रामायण सम्पन्न

दशमी के शुभ अवसर पर आज चित्रगुप्त मन्दिर नौतनवा के प्रांगड़ में मन्दिर व्यवस्थापक व कायस्थ समाज की तरफ से आयोजित अखण्ड रामायण पाठ के समापन एवं विशिष्ट व्यक्तियों के सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व मंत्री मान0 श्याम नारायण तिवारी,विधायक मान0 अमन मणि त्रिपाठी व विशिष्ट अतिथि नौतनवा नगर पालिका अध्यक्ष गुड्डू खान ने समाज मे अपने सामाजिक कार्यो द्वारा अमिट छाप छोड़ने वाले व्यक्तियों को गुरु वस्त्र ओढ़ाकर तथा भगवान चित्रगुप्त का चित्र देकर सम्मानित किया।कार्यक्रम का संचालन शनि श्रीवास्तव ने बखूबी निभाया। इस अवसर पर पूर्व मंत्री ने कहा कि आप जैसे विद्वान लोगो के बीच मे कहने के लिए मेरे पास वो उपयुक्त शब्द नही मिल रहे है जिसे मैं आपकी प्रसंसा में व्यक्त कर सकू। मान0 विधायक ने बताया कि कायस्थ समाज के लोगो ने आमजन को संस्कार व पढ़ना- लिखना सिखाया है, आज आपकी ही देन है कि समाज विकास की तरफ उन्मुख हो रहा है। विशिष्ट अतिथि ने अपने सम्बोधन में कहा कि आप के समाज द्वारा जो मुझे सम्मान दिया गया है मैं इसके लिए आप सभी का शुक्रगुजार हूँ मेरे लायक जो भी सेवा होगी उसके लिए मैं सदैव तत्पर रहूंगा। इस अवसर पर बन्टी श्रीवा0, अनूप पाण्डेय,भानू कुमार, अनिल मद्धेशिया, किसमती देवी,विजय श्रीवा0,प्रो0 अमित श्रीवा0, डॉ0 अरविन्द श्रीवा0,दिवाकर लाल श्रीवा0,राधे मोहन लाल श्रीवा0,योगेन्द्र लाल श्रीवा0,भागवत लाल श्रीवा0, ओमप्रकाश लाल श्रीवा0,वृजेन्द्र श्रीवा0,प्रफुल्ल श्रीवा0, सुभाष चंद श्रीवा0,बाके बिहारी लाल,आशीष श्रीवा0, संतोष जाय0 आदि लोग उपस्थित रहे।

अयोध्या में बड़े ही धूमधाम से दुर्गा माँ की प्रतिमाएं सरयू में कई गई विसर्जित

अयोध्या। नगर मे स्थापित लगभग सभी माँ दुर्गा की मनमोहक एवं आकर्षक प्रतिमाए फूलमालाओ से सुसज्जित रथ पर सवार होकर अपने अपने वैकल्पिक पूजा स्थलो से निकलकर सहादतगंज हनुमानगढ़ी होते हुये श्रीभगवान जायसवाल घाट (निर्मलीकुण्ड) पहुँची जहां श्रद्धा के चरमोत्कर्ष के साथ माँ भक्तो ने उल्लासपूर्वक 'जय माता दी' के गगनभेदी जयकारों के बीच नम आंखों से माँ भगवती की विदाई करते हुये यह प्रार्थना की कि अगले वर्ष माँ भगवती की कृपा से पूरा विश्व कोरोना महामारी की काली छाया से मुक्त हो जाये और हम भक्तजन दुर्गापूजा महोत्सव विगत वर्षो की भाँति पूरी भव्यता के साथ मनाते हुये ढोल नगाड़ो की धुन पर नाचते गाते भक्तो के अपार जनसमूह के साथ विसर्जन कर सके। दिन मे 11 बजे से केन्द्रीय दुर्गापूजा एवं रामलीला समन्वय समिति के अध्यक्ष मनोज जायसवाल एवं प्रमुख संरक्षक विजय गुप्ता, रामलीला प्रमुख प्रेमनाथ राय, सहसंयोजक गगन जायसवाल, वरिष्ठ पदाधिकारी केशव बिगुलर एवं विद्युत विभाग प्रमुख सुप्रीत कपूर आदि पदाधिकारियों की अगुवाई मे कोविड 19 की गाइडलाइन के अनुसार माँ की प्रतिमाओ को विसर्जित करने का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ।

विसर्जन स्थल निर्मलीकुण्ड पर प्रतिमा विसर्जन कार्यक्रम सकुशल निर्विघ्नता एवं शांतिपूर्ण तरीके से सम्पन्न कराने हेतु जिलाधिकारी अनुज कुमार झा, नगर आयुक्त विशाल सिंह, अपर जिलाधिकारी नगर डा0 वैभव शर्मा, पुलिस अधीक्षक नगर विजयपाल सिंह, नगर मजिस्ट्रेट सत्य प्रकाश सिंह,

पुलिस क्षेत्राधिकारी निपुण अग्रवाल एवं तहसीलदार तथा सिचाई विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे। केन्द्रीय समिति के प्रवक्ता डा0 शैलेन्द्र विक्रम सिंह ने बताया कि भले ही इस वर्ष कोरोना महामारी के चलते दुर्गापूजा महोत्सव तमाम पाबंदियों एवं विभिन्न बंदिशों के चलते धूम धाम एवं भव्यता से वंचित रहा परन्तु माँ भक्तो के भावपूर्ण उत्साह एवं उल्लास से आयोजन मे कोई कमी नहीं महसूस हुई। सायं लगभग 6 बजे तक चले प्रतिमा विसर्जन के कार्यक्रम की व्यवस्था मे केन्द्रीय समिति के शिवजी गौड़, शक्तिवाहिनी प्रमुख प्रमोद जायसवाल, ज़ोनल प्रमुखगण अतुल सिंह, राजेश गौड़, आलोक शंकर, दीपक गौतम, राजू जायसवाल, पवन निषाद, अखिलेश पाठक, चन्दन गुप्ता एवं अमित कनौजिया आदि तन मन से लगे रहे। सेक्टर प्रमुखगण बजरंगी साहू , रंजीत शर्मा, राजेश श्रीवास्तव एवं अर्जुन सोनी तथा रोहिताश्व चंद राजू, रोहित अग्रवाल, विवेक साहू, अंकुश गुप्ता, संजय श्रीवास्तव, राधेश्याम यादव, अवधेश तिवारी, अजय विश्वकर्मा, दिलीप यादव, अमित तिवारी, विशाल गुप्ता, अभिषेक गुप्ता एवं मोहित गुप्ता आदि के पदाधिकारीगण विसर्जन कार्यक्रम को गतिमान बनाए रखने मे लगे रहे। रामलीला प्रभारी प्रेमनाथ राय ने बताया कि मर्यादा पुरुषोत्तम राजा रामचन्द्र के गगनभेदी जयकारों के साथ विजयादशमी के पावन पर्व पर लक्ष्मी देवी रामलीला स्थल पर कन्हैया अग्रवाल, घनश्याम अग्रवाल, विष्णु भज्जा एवं अखिलेश अग्रवाल के संयोजन मे तथा साहबगंज रामलीला स्थल पर अशोक कुमार सिंह, अमित गुप्ता, अवध किशोर मिश्रा एवं राजकुमार पाण्डेय के संयोजन मे रामलीला मंचन करके रावण वध किया गया तत्पश्चात रावण के पुतले का दहन हुआ तथा फतेहगंज, हैदरगंज एवं सिविल लाइन करम अली का पुरवा रामलीला समितियों द्वारा रावण दहन का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

शाहपुर पुलिस ने तीन साल से फरार चल रहे वांछित अभियुक्त को स्पोर्ट चौराहे से गिरफ्तार

गोरखपुर/शाहपुर थाना में दर्ज धोखाधड़ी व कूटरचित दस्तावेज तैयार करके बैंक से लोन लेकर 3 साल से फरार चल रहे अभियुक्त विनोद कुमार यादव को शाहपुर पुलिस ने स्पोर्ट्स चौराहे के पास से गिरफ्तार किया। शाहपुर थाना प्रभारी सुधीर सिंह ने बताया कि वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के निर्देशन व एसपी सिटी डॉक्टर कौस्तुभ के पर्यवेक्षण में क्षेत्राधिकारी गोरखनाथ रत्नेश कुमार सिंह निर्देश में कार्य करते हुए 3 साल से फरार चल रहे अभियुक्त विनोद कुमार यादव पुत्र राम तीरथ यादव निवासी बघाड थाना बेलघाट को स्पोर्ट चौराहे के पास से गिरफ्तार किया गया है जिसकी काफी दिनों से पुलिस तलाश कर रही थी इसे गिरफ्तार करके न्यायालय भेजा जा रहा है गिरफ्तार करने वाली उपनिरीक्षक लाल जी उप निरीक्षक राहुल सिंह शामिल रहे।

राष्ट्रद्रोही फारूख और महबूबा को कब होगी सजा

विपक्षी होने के नाते भाले ही फारूख अब्दुला और महबूबा मुफ्ती को सरकार के खिलाफ बोलने और कोसने का हक है। लेकिन पिछले लम्बे अरसे से जिस तरह के बयान इन दोनों नेताओं के राष्ट्र के विरोध में आ रहे है उससे सरकार ही नही आम जनमानस में इनके प्रति कोध्र उफान मान रहा है। केन्द्र सरकार भले ही वोट बैंक या फिर किन्ही अन्य कारणों से इनके खिलाफ राष्ट्रद्रोह का मुकदमा दर्ज कर इन्हें जेल न भेज रही हो लेकिन जिस तरह के बयान लगातार इन नेताओं द्वारा भारत के खिलाफ दिये जा रहे उसके तहत इन पर राष्ट्रद्रोह का मुकदमा तो बनता ही है। आखिर ऐसे किसी फैसले के विरोध में खड़े होकर चीन की मदद लेने अथवा भारतीय ध्वज को न उठाने की बातें करने वाले किस मुंह से यह कह सकते हैं कि वे राष्ट्रविरोधी नहीं हैं? ये हरकतें तो साफ तौर पर राष्ट्रविरोधी ही हैं। फारूक अब्दुल्ला यह भी सफाई दे रहे हैं कि उनकी लड़ाई मजहबी नहीं है, लेकिन उनका रुख-रवैया यही साबित कर रहा है कि वह हुर्रियत कांफ्रेंस की तरह से अपनी अलगाववादी राजनीति को मजहबी रंग दे रहे हैं। वास्तव में इसी कारण वह जम्मू क्षेत्र के लोगों की आकांक्षाओं की कहीं कोई परवाह नहीं कर रहे हैं। केन्द सरकार की दरियादिली कहे या फिर मजबूरी कि फारूख अब्दुला यहॉ तक बयान दे चुके है कि कश्मीर भारत के बाप का नही है। जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 की बहाली की मांग करने वाले कश्मीर आधारित राजनीतिक गुटों की ओर से तथाकथित गुपकार गठबंधन का गठन उसी तरह की एक शरारत भरी कवायद है, जैसे हुर्रियत कांफ्रेंस के नाम पर की गई थी। इस गुपकार गठबंधन का भी वही हश्र होगा, जो आतंकपरस्त हुर्रियत कांफ्रेंस का हुआ, क्योंकि उसके नेता और खासकर फारूक अब्दुल्ला और महबूबा मुफ्ती भी पाकिस्तान एवं चीन की भाषा बोल रहे हैं और वह भी निहायत बेशर्मी के साथ। गुपकार गठबंधन के अध्यक्ष के रूप में फारूक अब्दुल्ला का यह कहना देश-दुनिया की आंखों में धूल झोंकने के अलावा और कुछ नहीं कि हम भाजपा विरोधी हैं, देश विरोधी नहीं। महबूबा और अब्दुल्ला बड़ी चतुराई से यह भूल रहे हैं कि अनुच्छेद 370 को खत्म करने का फैसला दो तिहाई बहुमत से संसद ने लिया था। केवल कश्मीर आधारित राजनीतिक गुटों की ओर से संविधान के अस्थायी अनुच्छेद 370 की वापसी का राग अलापना यही बताता है कि वे घाटी को देश और यहां तक कि जम्मू से भी अलग मानते हैं। उनके इस मुगालते को दूर करने की सख्त जरूरत है कि कश्मीर उनकी जागीर है। वैसे भी इन गुटों और खासकर नेशनल कांफ्रेंस और पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी ने कश्मीर को लूटा ही है। इस लूट-खसोट से कश्मीर की जनता भी अवगत है। वह इससे भी परिचित है कि ये गुट जब सत्ता में होते हैं तो किस तरह देश, संविधान की बातें करते हैं और सत्ता से बाहर होने पर पाकिस्तान की भाषा बोलने लगते हैं। जम्मू-कश्मीर देश का अभिन्न अंग हैं और इस बात में कोई शक नहीं। जम्मू-कश्मीर को दुश्मनों की बुरी नीयत से बचाने के लिए न जाने कितने ही भारतीय सेना के जवान सीमा पर शहीद हो गए, पर उनकी शहादत का देश में बैठे कुछ नेता मजाक उड़ा रहे हैं। पीडीपी अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती की बात कर रहे हैं। जो खुलेआम भारत को धमकी दे रही हैं, देश विरोधी ताकतों को बल दे रही हैं। अब वे विदेशी ताकतों को हवा देते हुए यहॉ तक बोल गई कि ''डकैतों ने हमारा झंडा छीना '' । बॉत यही नही खत्म हुई बल्कि महबूबा ने भारतीय तिरंगा न उठाने का ऐलान कर सीधे भारतीय संविधान को चुनौती दी है। जबकि 25 फरवरी 1917 पूर्व केंद्रीय मंत्री फारूक अब्दुल्ला ने विवादित बयान देते हुए कहा थी कि नई पीढ़ी के आतंकी आजादी के लिए लड़ रहे हैं। इके बाद 16 नवम्ब्र 2017 अब्दुल्ला ने कहा था कि ÷हम कब तक कहते रहेंगे की (पीओके) हमारा हिस्सा है?3 पीओके पाकिस्तान है और ये भारत370 साल हो गये , वो पाकिस्तान है, ये हिंदुस्तान है.÷।अब्दुल्ला कह चुके है कि ÷आज वे (भारत) दावा करते हैं कि ये भारत का हिस्सा है. तो इसे ले लीजिए. हम भी कहते हैं कि इसे ले लीजिए. हम भी देंखेंगे. वे कमजोर नहीं हैं और उन्होंने चूड़ियां नहीं पहन रखी है. उनके पास भी परणामु बम है। युद्ध के बारे में सोचने से पहले हमें इंसान की तरह रहने के बारे में सोचना चाहिए। लेकिन गुपकार गठबंधन के नेताओं को जितनी जल्दी यह समझ आए तो अच्छा कि यह देश किसी भी कीमत पर 370 की वापसी के लिए सहमत नहीं हो सकता, क्योंकि उसने अलगाव, अन्याय और आतंक के बीज बोने के अलावा और कुछ नहीं किया। फारूक अब्दुल्ला कितनी ही लीपापोती करें, देश उन्हें माफ नहीं कर सकता, क्योंकि उन्होंने भारत की ओर आंख उठाने वाले चीन की खुली तरफदारी करके लोगों का सम्मान हमेशा के लिए खो दिया है। नेशनल कांफ्रेंस और पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी के नेताओं के भारत विरोधी और पाकिस्तान एवं चीन समर्थक रवैये से यह साफ है कि उनकी विचारधारा एक तरह से वही है जो आतंकी और नक्सली संगठनों की है। इन दलों के लिए जम्मू-कश्मीर का मतलब केवल घाटी है।जम्मू-कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री और पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी की अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती ने राज्य का झंडा एवं संविधान लौटाने की मांग करके अलगाववाद की पैरवी करने के साथ ही पाकिस्तान के सुर में सुर मिलाने का ही काम किया है। उन्होंने जम्मू-कश्मीर का पुराना झंडा हाथ में लेकर अलगाव और आतंक की जमीन तैयार करने वाले अनुच्छेद 370 को बहाल करने की मांग करके उन कारणों को सही ही साबित किया, जिनके चलते उन्हें लंबे समय तक नजरबंद रखा गया। उन्हें जम्मू-कश्मीर के साथ-साथ देश के हितों की किस तरह कहीं कोई परवाह नहीं, इसका पता उनकी इस धमकी से चलता है कि पुरानी व्यवस्था बहाल न होने तक वह किसी चुनावी प्रक्रिया में भाग नहीं लेंगी। वह ऐसा न करें तो उनकी मर्जी, लेकिन उन्हें इसकी इजाजत बिल्कुल नहीं दी जा सकती कि वह लोगों को भड़काने के साथ राष्ट्र की भावनाओं को आहत करने का काम करें। यह दुर्योग नहीं कि महबूबा मुफ्ती उन फारूक अब्दुल्ला के साथ खड़ी हैं, जो चीन की मदद से अनुच्छेद 370 की वापसी का सपना देख रहे हैं। यह अच्छा हुआ कि इस तरह का बुरा सपना देखने वालों को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यह दो टूक जवाब दिया कि इस अनुच्छेद की वापसी किसी भी सूरत में नहीं होने वाली। यह जवाब इसलिए जरूरी हो गया था, क्योंकि पिछले दिनों कांग्रेस के वरिष्ठ नेता चिदंबरम ने भी विभाजनकारी और भेदभाव को संरक्षण देने वाले अनुच्छेद 370 की तरफदारी की थी।चूंकि अब यह स्पष्ट है कि महबूबा मुफ्ती और फारूक अब्दुल्ला जैसे नेता अपने जहरीले और राष्ट्रविरोधी बयानों से कश्मीर का माहौल खराब करने का काम कर सकते हैं इसलिए उनकी गतिविधियों पर कड़ी निगाह रखी जानी चाहिए। वास्तव में अनुच्छेद 370 के खात्मे के बाद कश्मीर के सामान्य होते माहौल को जो भी बिगाड़ने का काम करे, उसके खिलाफ सख्ती बरतने में संकोच नहीं किया जाना चाहिए। यही नही महबूबा मुफ्ती और फारूक अब्दुल्ला पर आज नहीं बल्कि कई साल पहले ही देशद्रोह का आरोप लगना चाहिए था। यही कश्मीर घाटी जब हिन्दुओं से खाली करवा ली गई थी, तभी इन पर देशद्रोह का मुकदमा होना चाहिए था। फारूक अब्दुल्ला और महबूबा मुफ्ती जैसे लोगों पर देशद्रोह का मुकदमा दायर होना चाहिए। ये लोग दोबारा कश्मीर का लोकतंत्र लौटाएंगे। हमारी सरकार इनको डिफेंड करती है और महिमामंडन करती है. इसलिए इनका आजतक कुछ नहीं बिगड़ा।

सम्पादकीय

चुनावी वैक्सीन

यूं तो चुनावों और वायदों का पुराना रिश्ता रहा है। नेता खुलकर जनता के अहसासों से खेलते हैं और उम्मीदों का आसमान दिखाते हैं। बिहार के विधानसभा चुनाव में वायदों की बाढ़ का अंतहीन सिलसिला जारी है लेकिन केंद्र में सतारूढ़ भाजपा द्वारा जारी संकल्प पत्र में हर बिहारवासी को मुफ्त में कोरोना टीका उपलब्ध कराने के वायदे ने पूरे देशघ्में एक विवाद खड़ा कर दिया है। विपक्षी दल इसे कोरोना महामारी का राजनीतिकरण बता रहे हैं। निस्संदेह कोई राजनीतिक दल कोई भी वायदा कर सकता है लेकिन उसका नैतिक पक्ष भी देखना जरूरी है। इस समय पूरा देश इस महामारी से जूझ रहा है। ऐसे में एक राज्य के लिये अलग से वोट के बदले वैक्सीन की घोषणा निश्चित रूप से नैतिक दृष्टि से उचित नहीं है। दरअसल, इस महामारी में केंद्र और राज्यों में जैसा समन्वय महामारी से जूझने में देखने को मिला, वह प्रशंसनीय है। कई राज्यों से आवाजें उठने लगी हैं कि बिहार को वैक्सीन सिर्फ इसलिये मुफ्त देने की बात है कि वहां वोट लेना है। पूरा देश एक सदी बाद आयी महामारी से जूझ रहा है और वैक्सीन को लेकर हर कोई संवेदनशील है। हरेक की चिंता है कि उसे वैक्सीन मिल पायेगी या नहीं। तो ऐसे में किसी राजनीतिक घोषणा के जरिये वैक्सीन देने की बात करना एक भावनात्मक खिलवाड़ जैसा लगता है। यूं तो महामारी और अन्य संक्रामक रोगों के खिलाफ राष्ट्रीय स्तर पर मुहिम केंद्र सरकार के नेतृत्व में ही चलायी जाती है। अखरने वाली बात यहघ्भी है कि पूरी दुनिया इस समय कोरोना महामारी से जूझ रही है। इस दौरान कई देशों में चुनाव भी हुए हैं लेकिन किसी भी देश में वोट के लिये वैक्सीन देने का वायदा नहीं किया गया। यहां तक कि दुनिया के सबसे ताकतवर लोकतंत्र और कोरोना से सबसे ज्यादा प्रभावित अमेरिका में अगले महीने होने वाले राष्ट्रपति चुनाव को लेकर भी कोई ऐसा वायदा नहीं किया गया। वैक्सीन के अलावा बिहार में वायदों की भरमार है। ज्यों-ज्यों चुनाव नजदीक आ रहा है, वायदों का शोर तेज होता जा रहा है। बिहार में साठ फीसदी आबादी 35 साल से कम की है। ऐसे में युवा और रोजगार वायदों के केंद्र में है।

कानून बनाने वाले ही कानून की धज्जियाँ उड़ाने के सबसे बड़े जिम्मेदार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गत 20 अक्टूबर को एक बार फिर देश की जनता को संबोधित किया। कोरोना कल में प्रधानमंत्री का जनता से यह सातवाँ संबोधन था। इस बार भी उन्होंने जनता को कोरोना के गंभीर खतरों से आगाह कराते हुए कोरोना बचाव संबंधी गाइड लाइन का पूरी सख्ती से पालन करने का आवाहन किया। उन्होंने कोरोना के वर्तमान हालात पर चिंता जताते हुए देश की जनता से अपील की है कि कोरोना काल में लापरवाही न बरतें, बिना मास्क के घर से बाहर न निकलें। मोदी ने कहा है कि लॉकडाउन हटा है, कोरोना नहीं गया है। सामाजिक दूरी बनाए रखने पर जोर देते हुए उन्होंने यह भी कहा कि 2 गज की दूरी बनाए रखना और मास्क लगाना बेहद जरूरी है। प्रधानमंत्री ने मीडिया और सोशल मीडिया पर भी इस संबंध में जागरूकता लाने व कोरोना संबंधी नियमों का पालन करने के लिए जन-जागरण अभियान चलाने की जरुरत पर बल दिया। देश के मुखिया के रूप में प्रधानमंत्री की उक्त चिंताएं स्वभाविक थीं। अब जरा बिहार के उप मुख्यमंत्री व भाजपा नेता सुशील मोदी के अत्यधिक आत्म विश्वास भरे भाषण का अंश भी सुनिए। सुशील मोदी ने वर्तमान में हो रहे बिहार चुनावों में एक जन सभा को संबोधित करते हुए कहा कि-आप कोरोना को मुद्दा बनाइये। इतनी बड़ी भीड़ देखकर लगता है कोरोना तो भाग गया। कहाँ है कोरोना ? ये बिहार है मित्रों,हम लोगों ने बेहतर इंतजाम किया यह उसी का परिणाम है कि बिहार में केवल साढ़े नौ सौ लोगों की मृत्यु हुई है जो दुखद है। भाजपा के उपरोक्त दोनों श्मोदीश् के संबोधन में कितना विरोधाभास नजर आता है ? बिहार व मध्य प्रदेश की इस समय जमीनी हकीकत भी यही है। सुशिल मोदी के भाषण से तो ऐसा प्रतीत होता है कि प्रधानमंत्री का संबोधन केवल विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा वैश्विक नेताओं व अन्य देशों को यह जताने मात्र के लिए ही होता है कि भारत उनके नेतृत्व में कोरोना का कितनी गंभीरता से मुकाबला कर रहा है। परन्तु सुशील मोदी तो बिहार की कोरोना संबंधी जमीनी हालात को नजर अंदाज करते हुए जो सार्वजनिक भाषण दे रहे हैं वे तो बेहद गैर जिम्मेदाराना हैं ? अपने इसी भाषण के चंद दिनों बाद ही स्वयं उनके भी कोरोना पॉजिटिव होने की खबर आ गयी। वैसे भी बिहार के दो मंत्री कोरोना की भेंट चढ़ चुके हैं। इनमें पिछड़ा-अति पिछड़ा कल्याण मंत्री विनोद सिंह तथा बिहार के पंचायती राज मंत्री कपिल देव कामत का कोरोना से निधन हो चुका है। बिहार सरकार के अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री खुर्शीद उर्फ फिरोज अहमद की पत्नी जेबुन निसा (55) की कोरोना संक्रमण से मौत हो चुकी है। इसी प्रकार एक केंद्रीय मंत्री,अन्य कई राज्यों के मंत्री,विधायक कई आला अधिकारी यहाँ तक कि कोरोना से दूसरों की जान बचने वाले सैकड़ों डॉक्टर्स व स्वास्थ्यकर्मी इस गंभीर मर्ज की भेंट चढ़ चुके हैं। ऐसे में यदि कोई झूठे आत्म विश्वास का सहारा लेकर मात्र अपने राजनैतिक लाभ के लिए देश की जनता को गुमराह करता है या उसके सामने इस मर्ज की गंभीरता को कम करके आंकने की कोशिश करता है तो वास्तव में वह राजनेता नहीं बल्कि मानवता का सबसे बड़ा दुश्मन तथा महामारी अधिनियम का मजाक उड़ाने का सबसे बड़ा दोषी है। प्रधानमंत्री अपने 20 अक्टूबर के राष्ट्र संबोधन के बाद यानी देश को सामाजिक दूरी व मास्क लगाने जैसा पाठ पढ़ाने के बाद 23 अक्टूबर से बिहार के चुनावी दौरे पर भी निकल पड़े। बिहार में चाहे वह प्रधानमंत्री की सभाएँ हों या राहुल गाँधी,तेजस्वी यादव अथवा नितीश कुमार की। हर जगह बे काबू भीड़,सोशल डिस्टेंसिंग की धज्जियाँ उड़ना,मास्क लगाना तो गोया जनता जानती ही नहीं,यही स्थिति साफ नजर आ रही है। जहाँ राजनैतिक दल विभिन्न मुद्दों पर एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप करते दिखाई देते हैं वहीँ कोरोना के दिशा निर्देशों की अवहेलना करने का आरोप कोई भी एक दूसरे पर नहीं लगाता। वजह साफ है कि हम्माम में सभी नंगे हैं। यह तो भला हो ग्वालियर के सामाजिक कार्यकर्ता आशीष प्रताप सिंह का जिन्होंने ग्वालियर उच्च न्यायलय की युगल पीठ में प्रमाण सहित एक जनहित याचिका दायर कर केंद्रीय सिंचाई मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर व मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्य मंत्री कमल नाथ के विरुद्ध कोविद महामारी अधिनियम का उल्लंघन करने का मामला दर्ज करने का आदेश हासिल किया जिसके परिणाम स्वरूप दोनों नेताओं के विरुद्ध एफ आई आर दर्ज की जा सकी। अन्यथा प्रशासन के आला अधिकारी भी आसानी से इस स्तर के नेताओं के विरुद्ध कार्रवाई करने का साहस नहीं जुटा पाते। कोविद के शुरूआती दौर में ही कर्नाटक व महाराष्ट्र से ऐसे कई समाचार आए थे की एक ओर तो आम लोगों के शादी समारोह स्थगित कर दिए गए तो दूसरी ओर नेतागण पूरे धूमधाम से शादियाँ भी कर रहे थे और बर्थडे पार्टियाँ भी मना रहे थे। कई आयोजनों में तो कर्नाटक के मुख्य मंत्री वाई एस येदुरप्पा भी शरीक हुए थे। देवगौड़ा के परिवार में भी इसी दौरान शादी समारोह हुआ था। परन्तु उच्च स्तर पर होने वाली ग्वालियर की पहली कार्रवाई है अन्यथा कहीं सामाजिक दूरी बनाए रखने संबंधी नियमों का उल्लंघन करने के लिए महाराष्ट्र के सतारा और शिर्डी में धार्मिक जुलूस निकलने को लेकर आईपीसी की धारा 188 और महाराष्ट्र पुलिस अधिनियम की धारा 153 के तहत मामला दर्ज किया गया तो कहीं उत्तर प्रदेश में बलरामपुर जिले के उतरौला कोतवाली क्षेत्र में कोरोना वायरस महामारी के दौरान सामाजिक दूरी का पालन न करने के मामले में 2,000 लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया।कहीं मुहर्रम पर ताजीए निकालने वालों के विरुद्ध रासुका की कार्रवाई हुई। तो कहीं हिमाचल के कांगड़ा जिले के एक निजी अस्पताल को केवल इसीलिए सील कर दिया गया कि यहाँ सोशल डिस्टेंसिंग की धज्जियाँ उड़ाई जा रही थीं। निश्चित रूप से महामारी अधिनियम 1897 जनहित के लिए बनाया गया एक अधिनियम है जिसे कोविड जैसे अपरिहार्य अवसरों पर सख्ती से लागू किया जाता है। परन्तु क्या इस अधिनियम का पालन केवल आम लोगों को ही करना है ? कानून बनाने वाले क्या इस अधिनियम की पालना करने श्रेणी में नहीं आते ? बिहार के आम चुनाव,मध्य प्रदेश के उपचुनावों तथा राजनेताओं के पारिवारिक समारोहों की चकाचौंध देखकर तो कम से कम ऐसा ही लगता है कि कानून बनाने वाले ही कानून की धज्जियाँ उड़ाने के सबसे बड़े जिम्मेदार हैं।

प्याज के आंसू

कोरोना संकट से उपजे आर्थिक संकुचन के बीच प्याज की आसमान छूती कीमतों ने उपभोक्ताओं की मुश्किलें और बढ़ा दी हैं। कहने को तो सरकार ने फौरी तौर पर कीमतों पर नियंत्रण की कवायद शुरू कर दी है, मगर कीमतों में कमी होती नजर नहीं आ रही है। प्याज की कीमतों का सौ रुपये तक जाना खरीदारों का बजट बिगाड़ रहा है, लोग खरीद में कटौती कर रहे हैं। दरअसल, अतिवृष्टि से कर्नाटक में प्याज की फसल को भारी नुकसान पहुंचा। इसी प्याज की आपूर्ति सितंबर-अक्तूबर में होती थी। उम्मीद है कि अक्तूबर के अंत तक महाराष्ट्र में होने वाली प्याज की फसल के बाजार में आने के बाद शायद कीमतों में कमी आए। आशंका है कि मौसम की मार के अलावा जमाखोरी की भी कीमतों की वृद्धि में भूमिका हो। अनुमान है कि हाल ही के कृषि सुधारों के क्रम में प्याज को जिस तरह से आवश्यक वस्तु कानून के दायरे से बाहर किया गया, उससे जमाखोरी को बढ़ावा मिला है। यही वजह है कि फौरी तौर पर सरकार ने जमाखोरी रोकने के लिये स्टॉक लिमिट लगा दी है। अब थोक विक्रेताओं के लिए स्टॉक लिमिट को 25 मीट्रिक टन किया गया है, वहीं खुदरा व्यापारियों के लिये यह मात्रा दो मीट्रिक टन है। लेकिन आयात किये जाने वाले प्याज पर यह लिमिट लागू नहीं होगी। वहीं दूसरी ओर संकट को देखते हुए सरकार ने प्याज के निर्यात पर रोक लगाने के बाद इसके आयात की अनुमति दी है ताकि मांग व आपूर्ति के संतुलन से प्याज की कीमतों को नियंत्रित किया जा सके। लेकिन फिलहाल सरकार के कदमों का प्याज की कीमतों के नियंत्रण पर बड़ा असर नजर नहीं आ रहा है। ऐसे में प्याज की कीमतों में पड़ने वाले कारणों का समग्र विवेचन करना जरूरी हो जाता है। उन कारकों की पड़ताल भी जरूरी है जो हर साल प्याज की कीमतों में उफान ले आते हैं। दरअसल, भारत में मुख्यतरू प्याज की तीन फसलें बाजार में आती हैं। अक्तूबर, दिसंबर और मार्च में आने वाली इन फसलों की आपूर्ति से कीमतों पर नियंत्रण बना रहता है। लेकिन एक भी फसल के बाधित होने से बाजार में कीमतें उछाल मारने लगती हैं। इधर एक घटक यह भी है कि मार्च में आने वाली रबी की प्याज में नमी की मात्रा कम होने के कारण किसान भी बड़े पैमाने पर इसका भण्डारण महाराष्ट्र में करने लगे हैं। इसकी आपूर्ति कर्नाटक के प्याज न आने की स्थिति में अब हो रही है।

अमेरिका में 'देसी' का दबदबा

अमेरिका में हालिया ओपिनियन पोल से स्पष्ट है कि भारतीय मूल के 28 प्रतिशत मतदाताओं का रुझान डोनाल्ड ट्रंप की तरफ है और शेष का जो बाइडेन की तरफ साल 2016 के बाद यह बड़ा परिवर्तन है. तब भारतीय मूल के केवल 16 फीसदी मतदाताओं ने हिलेरी क्लिंटन के बजाय ट्रंप को वरीयता दी थी. ह्यूस्टन में आयोजित 'हाउडी मोदी' कार्यक्रम में ट्रंप और मोदी के बीच जबरदस्त तालमेल दिखा था, वहां भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'अबकी बार ट्रंप सरकार' का नारा लगवाया था. साथ ही ट्रंप द्वारा अफ्रीकी-अमेरिकी और हिस्पेनिक्स लोगों को निशाना बनाये जाने से भारतीय-अमेरिकियों की विशिष्ट मानसिकता पर अतिरिक्त असर हुआ है. कुछ वर्ष पहले जोइल स्टीन ने टाइम पत्रिका में 'मेरा अपना निजी भारत' नाम से एक बेहतरीन कॉलम लिखा था. यह न्यू जर्सी के एक शहर एडिसन के बारे में था. अमेरिका में भारतीय समुदाय का प्रतिनिधित्व करनेवाले लोगों द्वारा स्टीन को नस्लवादी और भारत-विरोधी कहा गया था. टाइम ने इसके लिए खेद प्रकट किया, लेकिन लोगों के गुस्से के बारे में उसे सही अंदाजा नहीं था. उसने लिखा- जोइल स्टीन द्वारा लिखे गये व्यंग्य स्तंभ की वजह से अगर हमारे किसी पाठक को कष्ट हुआ है, तो उसके लिए खेद है. यह बहुत चतुराईपूर्ण था. टाइम की कुछ ऐसी ही खूबी है. अन्य कारणों से भी एडिसन विख्यात है. यह जातीय समूह की एकमात्र ऐसी जगह थी, जिसने 2016 में डोनाल्ड ट्रंप की मेजबानी की थी. रिपब्लिकन हिंदू संघ द्वारा आयोजित पांच घंटे के कार्यक्रम में 5000 से अधिक बड़े, बूढ़े और बच्चे शामिल हुए थे. कार्यक्रम का आयोजन एवीजी ग्रुप ऑफ कंपनीज के चेयरमैन और सीइओ भारतीय-अमेरिकी उद्योगपति शलभ कुमार द्वारा किया गया था. बड़ा जनसमूह ट्रंप के समर्थन में उमड़ा था, वे हाथों में तख्तियां लिये थे, जिस पर लिखा था- ट्रंप मेक अमेरिका ग्रेट अगेन. ट्रंप फॉर हिंदू अमेरिकन, ट्रंप ग्रेट फॉर इंडिया और ट्रंप फॉर फास्टर ग्रीन कार्ड. पारंपरिक भारतीय वेशभूषा में समर्थन नारों के साथ एकत्रित भीड़ ट्रंप का समर्थन कर रही थी और अमेरिकी ध्वज की ओट से होते हुए ट्रंप मंच पर आये. स्पष्ट रूप से ट्रंप की एक बात जो लोगों को आकर्षित कर रही थी कि वे खुलकर मुसलमानों का विरोध कर रहे थे. काले और हिस्पेनिक्स लोगों के प्रति उनकी नफरत जाहिर थी. एडिसन नेवार्क अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के पास में स्थित है, इसीलिए भारतीय विमानों के ठहराव के लिए पहला गंतव्य स्थल है. यही कारण है कि दशकों से एडिसन भारतीय प्रवासियों के लिए आकर्षण का केंद्र रहा है, खासकर उन लोगों के लिए जो गुजरात से आते हैं. आज 20 फीसदी आबादी यानी लगभग 99,000 लोग भारतीय-अमेरिकी है, उनमें से ज्यादातर गुजराती हैं. कुछ मौकों पर मैं एडिसन एनजे गया, लेकिन यह वैसा शहर नहीं है, जैसा कि रहने के लिए मैं चाहता हूं. यह मैला-कुचौला और शोर-शराबे वाला शहर है. यहां भारतीय सस्ते खाने-पीने के सामानों के लिए मोलभाव करते हैं. एडिसन के बारे में मेरे एक मित्र का कहना है कि यह अमेरिका का दूसरा हाथ है. पहला होबोकेन है, वह भी न्यू जर्सी में ही है. देसी का मतलब है, जो घरेलू हो. सभी एनआरआइ द्वारा जब भारतीयों का जिक्र किया जाता है, तो उसे स्व-निंदा के तौर पर किया जाता है. पिछली गणना में अमेरिका में कम से कम 28 लाख लोग देसी थे. अमेरिकी जनगणना -2000 मानचित्र से स्पष्ट है कि भारतीय-अमेरिकी (आधिकारिक तौर पर एशियाई भारतीय) लोग खुद को स्थान विशेष पर संकेंद्रित करते हैं. मैं जब भी अमेरिका जाता हूं, तो मुझे आश्चर्य होता है कि हमारे भारतीय-अमेरिकी परिवार और मित्र केवल अन्य देसी के साथ समाजीकृत होते हैं. वे एक साथ झुंड में जाते हैं. अमेरिका में भारतीय-अमेरिकी समूहों की एक ठीक-ठाक संख्या है. लेकिन, एडिसन में यह जमावड़ा सबसे अधिक है. अमेरिका में भारतीय-अमेरिकी उच्चतम आय समूह का हिस्सा हैं. आमतौर पर वे ज्यादातर हिस्सों में वेतनभोगी कर्मचारी हैं. हालांकि, एडिसन में इस समुदाय की पेशेवर आमदनी की स्थिति अन्य भारतीय-अमेरिकियों की आय की तुलना में कम है. यह स्पष्ट तौर पर दिखता है. पांच में एक देसी गुजराती मूल का है. वे अन्य क्षेत्र के भारतीयों की तरह अपने लोगों में जीना और सामाजिक जुड़ाव रखना चाहते हैं. गुजराती स्वभाव से अधिक उद्यमी होते हैं. अमेरिका में छह लाख वाले गुजराती समुदाय में पेशेवर लोगों की संख्या बहुत कम है. यहां कम खर्च वाले आश्रयगृहों में आधे से अधिक के वे मालिक हैं. चूंकि, अमेरिका में रहनेवाले गुजरातियों में बड़ी संख्या में पटेल उपनाम वाले लोग हैं, इन होटलों को लोग 'पोटेल्स' कहते हैं. अक्सर इन जगहों पर घंटे के हिसाब से कमरे किराये पर दिये जाते हैं. एडिसन आरएसएस और रामभक्तों के लिए आदर्श केंद्र है, जो राजकोट या सूरत के बजाय इसे ज्यादा पसंद करते हैं. यह मोदी का देश है. सामान्य तौर पर भारतीय बहुत अधिक नस्लवादी, सांप्रदायिक और रंग भेदी होते हैं. हमारी राजनीतिक शुद्धता के स्पष्ट मानक नहीं हैं. हम रोजमर्रा के जीवन में नस्लवादी और दूसरों के लिए अपमानजनक आचरण करते हैं. अमेरिका में देसी समुदाय उससे ज्यादा अलग नहीं है. मीरा नायर की 1991 में आयी फिल्म 'मिसीसिप्पी मसाला' भारतीय-अमेरिकी समुदाय के बीच की कहानी है. हिंदू समाज में प्रचलित पूर्वाग्रहों को रेखांकित करती है. यह कहानी यूगांडा-भारतीय-गुजराती मूल की लड़की और खूबसूरत अफ्रीकी-अमेरिकी लड़के की प्रेम कहानी है, यह किरदार डेंजेल वाशिंगटन ने निभाया था. लेकिन, पोटेल बिजनेस वाला परिवार 'कालू' के साथ प्रेम की सख्त मुखालफत करता है. 'कालू' शब्द का इस्तेमाल देसी द्वारा अफ्रीकी मूल के व्यक्ति के लिए किया जाता है. अमेरिका के समृद्ध आय वाले समुदाय के तौर पर देसी अब अमेरिकी राजनीति में प्रभावशाली भूमिका में हैं. भारतीय हितों के लिए वे अपनी भूमिका निभा रहे हैं, चाहे वह असैन्य परमाणु समझौता हो या वर्क वीजा की संख्या बढ़ाने की बात हो. भारतीय-अमेरिकियों की आर्थिक ताकत को भी महसूस किया जाता है. यह अच्छा है कि वे अपनी मांसपेशियों को लचीला करना शुरू कर चुके हैं. लेकिन, यह अच्छा नहीं है कि कुछ इससे खुद की मूर्खता को भी प्रदर्शित कर रहे हैं।

सार समाचार ....

लुईस हैमिल्टन ने पुर्तगाल ग्रां प्री जीत कर महान माइकल शूमाकर का रिकार्ड तोड़ा

नई दिल्ली एजेंसी। ब्रिटिश ड्राइवर लुईस हैमिल्टन ने पुर्तगाल ग्रां प्री जीतकर रविवार को फॉर्मूला वन का नया इतिहास रच दिया। यह उनके कैरियर की 92वीं जीत थी और वह जर्मनी के महान ड्राइवर माइकल शूमाकर से आगे निकल गए हैं।

हैमिल्टन मर्सिडीज के अपने साथी ड्राइवर वालटेरी बोट्टास से 25.6 सेकंड आगे रहे। रेडबुल के मैक्स वेरस्टापेन तीसरे स्थान पर रहे। हैमिल्टन ने सबसे तेज लैप निकालकर अतिरिक्त अंक भी बनाया और अब चैम्पियनशिप टेबल में बोट्टास पर उनकी बढ़त 77 प्वॉइंट्स की हो गई है।

हैमिल्टन ने पहली एफवन रेस 2007 में जीती थी और पहला खिताब 2008 में अपने नाम किया। वह 2013 में मर्सिडीज से जुड़े और वहीं से उनका कैरियर परवान चढ़ा।वह पांच एफवन खिताब जीत चुके हैं जबकि शूमाकर के नाम सात खिताब हैं।

हरियाणा दिवस पर मून पिक माउंटेन को करेंगे फतेह

सोनीपत एजेंसी। हरियाणा दिवस (1 नवंबर) के उपलक्ष्य में पर्वतारोही रोहताश खिलेरी के नेतृत्व में एक दल 26 अक्तूबर को हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में स्थित मून पिक माउंटेन की चोटी फतेह करने निकलेगा। इस चोटी पर उनकी स्टूडेंट तेलनवाली गांव से संजीतू बांगड़वा और हिसार से 12 साल की अनु यादव भी चढ़ाई करने रवाना होंगी। खेल मंत्री संदीप सिंह एवं रेस्लर एवं भाजपा नेता बबीता फौगाट ने पर्वतारोही दल को झंडा देकर रवाना किया।? पर्वतारोही दल अपने अभियान पर रवाना होने से पहले कथूरा में खेल एवं युवा कल्याण राज्यमंत्री संदीप सिंह से मिलने पहुंचा था। खेल राज्यमंत्री संदीप सिंह ने पर्वतारोही दल को उनके अभियान के लिए शुभकामनाएं देते हुए कहा कि प्रदेश के खिलाड़ियों को उनकी जरूरत के हिसाब से सुविधाएं देने के लिए सरकार लगातार प्रयासरत है। उन्होंने कहा कि हमारे खिलाड़ियों को आगे बढ़ने के लिए जिस भी सुविधा की जरूरत होगी, उसे मुख्यमंत्री मनोहर लाल के प्रयास से खिलाड़ियों तक पहुंचाया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश के युवा खिलाड़ियों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाकर देश का नाम रोशन किया है। खिलाड़ियों के इस जज्बे को पूरा राष्ट्र सलाम करता है। पर्वतारोही रोहताश खिलेरी ने बताया कि 29 अक्तूबर को दल हिमाचल के मून पिक पर्वत पर चढ़ाई शुरू करेगा। एक नवंबर को हरियाणा दिवस के अवसर पर पर्वत की चोटी पर हरियाणा की ओर से ध्वज फहराने के साथ उनका यह अभियान पूरा होगा। खिलेरी हिसार के आदमपुर के गांव मलापुर के निवासी हैं और माउंट एवरेस्ट, अफ्रीका के माउंट किलिमंजारो और यूरोप में सबसे ऊंचे पर्वत माउंट एलब्रुस को दो बार फतेह कर चुके हैं।

धोनी की पत्नी साक्षी बोलीं- कुछ लोग जीतते तो कुछ हारते हैं

सोनीपत एजेंसी। आईपीएल में तीन बार की चैम्पियन चेन्नई सुपर किंग्स रविवार को रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु को 8 विकेट से हराने के बाद भी प्ले ऑफ की दौड़ से बाहर हो गई। क्योंकि एक अन्य मैच में राजस्थान रॉयल्स ने मुंबई इंडियंस को 8 विकेट से हरा दिया। जिससे चेन्नई की संभावना खत्म हो गई। चेन्नई ने इस सीजन में खेले 12 मैचों में से 8 मैच हारी है। जबकि 4 मैच जीते हैं। इसके आठ पॉइंट है। आईपीएल के इतिहास में पहली बार चेन्नई सुपर किंग्स प्ले ऑफ के दौड़ में नहीं पहुंचेगी। 2008 में आईपीएल शुरु होने के बाद से वह लगातार प्ले ऑफ में पहुंच रही है। दो सीजन में सस्पेंड रहने के कारण वह आईपीएल से बाहर थी। उसके बाद वापसी करते हुए 2018 और 2019 में फाइनल में पहुंची।

मुंबई, दिल्ली और बेंगलुरु का प्ले ऑफ में पहुंचना तय वहीं मुंबई इंडियंस, दिल्ली कैपिटल्स और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के 11 मैचों के बाद 14- 14 पॉइंट है। इन तीनों का प्ले ऑफ में पहुंचना तय है। वहीं चौथी टीम की दौड़ में सनराइजर्स हैदराबाद, कोलकाता नाइट राइडर्स,किंग्स इलेवन पंजाब और चेन्नई सुपर किंग्स

के बीच था। चेन्नई अभी पॉइंट टेबल में सबसे नीचे है। जबकि केकेआर के 11 मैच के बाद 12 पॉइंट हैं। वहीं किंग्स इलेवन पंजाब के 11 मैचों के बाद 10 और राजस्थान रॉयल्स के 12 मैचों के बाद 10 पॉइंट है। सीएसके के बाहर होने के बाद पहली बार धोनी की पत्नी ने सोशल मीडिया पर चेन्नई टीम के लिए कविता पोस्ट किया है।

प्ले-ऑफ की चौथी टीम के लिए किंग्स इलेवन और नाइट राइडर्स आमने-सामने

इस मैदान पर हुए कुल टी-20: 13
पहले बल्लेबाजी करने वाली टीम जीती: 9
पहले गेंदबाजी करने वाली टीम जीती: 4
पहली पारी में टीम का औसत स्कोर: 149

दुबई | एजेंसी।

आईपीएल के 13वें सीजन का 46वां मैच किंग्स इलेवन पंजाब (चङ्कङ्क) और कोलकाता नाइट राइडर्स (चचक्र) के बीच शारजाह में खेला जाएगा। टॉप-3 में मुंबई, दिल्ली और बेंगलुरु की हार के बाद प्ले-ऑफ की चौथी टीम के लिए जंग रोमांचक हो गई है। पंजाब और कोलकाता के बीच होने वाले मैच के विजेता के लिए प्ले-ऑफ की राह थोड़ी आसान हो जाएगी। वहीं, हारने वाली टीम के लिए मुश्किलें बढ़ जाएंगी।

कोलकाता ने पंजाब को 2 रन से हराया था

पिछली बार जब दोनों टीमों का आमना-सामना हुआ था, तो कोलकाता ने पंजाब को रोमांचक मुकाबले में 2 रन से हराया था। दुबई में खेले गए सीजन के 24वें मैच में कोलकाता ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 6 विकेट पर 164 रन बनाए थे। जवाब में पंजाब 5 विकेट पर 162 रन ही बना पाई थी।

कोलकाता चौथे और पंजाब पांचवें स्थान पर

पॉइंट्स टेबल की बात करें, तो कोलकाता 6 मैच जीतकर 12 पॉइंट्स के साथ चौथे स्थान पर है। वहीं, पंजाब 5 मैच जीतकर 10 पॉइंट्स के साथ पांचवें स्थान पर है। नेट रनरेट के मामले में पंजाब केकेआर से काफी बेहतर है।

राहुल-मयंक टॉप रन स्कोरर

पंजाब के कप्तान लोकेश राहुल 567 रन के साथ ऑरेंज कैप पर कब्जा किए हुए हैं। राहुल ने सीजन में एक शतक भी लगाया है। वहीं, मयंक अग्रवाल 398 रन के साथ अपनी टीम के लिए सबसे ज्यादा रन बनाने के मामले में दूसरे नंबर हैं।

केकेआर के लिए शुभमन गिल ने बनाए सबसे ज्यादा रन

कोलकाता के ओपनर बल्लेबाज शुभमन गिल ने अपनी टीम के लिए सबसे ज्यादा 321 रन बनाए हैं। गिल के अलावा कप्तान इयोन मॉर्गन ने 295 रन बनाए हैं। इसके बाद नीतीश राणा का नंबर है, जिन्होंने सीजन में अब तक 265 रन बनाए हैं।

मोहम्मद शमी पंजाब के सबसे सफल गेंदबाज

पंजाब के तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी 17 विकेट के साथ टीम के सबसे सफल गेंदबाज हैं। शमी के अलावा रवि बिश्नोई ने 10 और अर्शदीप सिंह ने 9 विकेट अपने नाम किए हैं। सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ पिछले मैच में पंजाब ने 126 रन का टारगेट डिफेंड किया था।

केकेआर के वरुण चक्रवर्ती के नाम 12 विकेट

केकेआर के लिए स्पिन गेंदबाज वरुण चक्रवर्ती ने सबसे ज्यादा 12 विकेट लिए हैं। वरुण ने पिछले मैच में दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ 5 विकेट लेकर अपनी टीम को बड़ी जीत दिलाई थी। वरुण के अलावा टी नटराजन ने सीजन में अब तक 11 विकेट लिए हैं। शारजाह में आसमान साफ रहेगा। तापमान 21 से 36 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है। शारजाह में पिच से बल्लेबाजों को मदद मिल सकती है। यहां स्लो विकेट होने के कारण स्पिनर्स को भी काफी मदद मिलेगी। शारजाह में टॉस जीतने वाली टीम पहले बल्लेबाजी करना पसंद करेगी। शारजाह में पिछले 13 टी-20 में पहले बल्लेबाजी वाली टीम की जीत का सक्सेस रेट 69 प्रतिशत रहा है।

पंजाब-कोलकाता के सबसे महंगे खिलाड़ी

कोलकाता के सबसे महंगे खिलाड़ी पैट कमिंस हैं। उन्हें सीजन के 15.50 करोड़ रुपए मिलेंगे। इसके बाद सुनील नरेन का नंबर आता है, जिन्हें सीजन के 12.50 करोड़ रुपए मिलेंगे। वहीं, पंजाब में कप्तान लोकेश राहुल 11 करोड़ और ग्लेन मैक्सवेल 10.75 करोड़ रुपए कीमत के साथ सबसे महंगे प्लेयर हैं।

कोलकाता ने 2 बार खिताब जीता, पंजाब को अब भी इंतजार

आईपीएल इतिहास में कोलकाता ने अब तक दो बार फाइनल (2014, 2012) खेला और दोनों बार चैम्पियन रही है। वहीं, पंजाब ने अब तक एक बार भी खिताब नहीं जीता है। 2014 में उसने फाइनल में जगह जरूर बनाई थी, लेकिन उसे कोलकाता के हाथों 3 विकेट से हार का सामना करना पड़ा था।

आईपीएल में कोलकाता का सक्सेस रेट पंजाब से ज्यादा

आईपीएल में कोलकाता का सक्सेस रेट 52.38त्न है। केकेआर ने अब तक कुल 189 मैच खेले हैं। जिसमें उसने 98 मैच जीते और 91 हारे हैं। वहीं, पंजाब का सक्सेस रेट 45.98त्न है। पंजाब ने अब तक कुल 187 मैच खेले हैं। जिसमें उसे 87 मैचों में जीत मिली और 100 में हार का सामना करना पड़ा।

आर्किटेक्चर की पढ़ाई कर चुके कोलकाता के मिस्ट्री बॉलर वरुण सात तरह से गेंद डाल सकते हैं

नईदिल्ली , एजेंसी। कोलकाता नाइटराइडर्स ने शनिवार को दिल्ली कैपिटल्स को 59 रन से हराया था। उस मैच में कोलकाता के लेग स्पिनर वरुण चक्रवर्ती ने 20 रन देकर 5 विकेट लिए थे। वे इस सीजन में 5 विकेट लेने वाले पहले गेंदबाज बने। 29 साल के वरुण ने कहा, 'मुझे बताया गया था कि मुझे छेटे एंड से गेंदबाजी करनी है, तो मुझे गेंद को विकेट टू विकेट करना जरूरी था। मैं मां मालिनी, पिता विनोद चक्रवर्ती और मंगेतर नेहा को धन्यवाद कहना चाहता हूं।' वरुण मौजूदा सीजन में 10 मैच में 7.05 की इकोनॉमी से 12 विकेट ले चुके हैं। कर्नाटक के वरुण आर्किटेक्ट भी हैं। आईपीएल में उनकी एंट्री मिस्ट्री बॉलिंग के चलते हुई। वरुण दावा कर चुके हैं कि वह सात तरह से गेंद फेंक सकते हैं। इनमें ऑफब्रेक, लेगब्रेक, गुगली, कैरम बॉल, फ्लिपर, टॉपस्पिन, पैर की उंगलियों पर यॉर्कर शामिल है। 2018 में टीएनपीएल में ब्रेक मिला, किंग्स इलेवन पंजाब ने 8.4 करोड़ में खरीदाः वरुण ने 2018 में तमिलनाडु प्रीमियर लीग (टीएनपीएल) में डेब्यू किया। उन्होंने अपनी टीम मदुरै पैंथर्स को पहली बार टाइटल दिलाया था। इस दौरान उन्होंने चेन्नई सुपरकिंग्स और कोलकाता नाइटराइडर्स के खिलाड़ियों को नेट्स पर गेंदबाजी भी की थी। इसी साल विजय हजारे ट्रॉफी में 9 मैच में 22 विकेट लिए। साल 2018 में किंग्स इलेवन पंजाब ने उन्हें 8.4 करोड़ रुपए में खरीदा जबकि उनका बेस प्राइज मात्र 20 लाख रुपए था। हालांकि वरुण को ज्यादा खेलने का मौका नहीं मिला। 2020 के लिए पिछले साल दिसंबर में हुई नीलामी में वरुण को कोलकाता ने 4 करोड़ रुपए में खरीदा था। वरुण कोलकाता टीम में शामिल होने से पहले दिनेश कार्तिक से विकेटकीपिंग के टिप्स ले चुके हैं।

13 साल की उम्र में खेलना शुरू किया, 17 साल तक विकेटकीपर थे

वरुण ने 13 साल की उम्र में क्रिकेट खेलना शुरू किया था। 17 साल तक वे विकेटकीपर बल्लेबाज थे। उन्हें कई बार ट्रायल में रिजेक्ट होना पड़ा। इसलिए उन्होंने क्रिकेट छोड़कर आर्किटेक्ट बनने का फैसला किया। उन्होंने चेन्नई की एसआरएम यूनिवर्सिटी से 5 साल का आर्किटेक्चर का कोर्स किया। पैशन को जिंदा रखने के लिए टेनिस बॉल क्रिकेट खेला करते। वे एक क्रिकेट क्लब से जुड़ गए। लेकिन दूसरे ही मैच में इंजरी हो गई और वरुण को बॉलिंग ऑलराउंडर से स्पिनर बनना पड़ा।

दुनिया को आकर्षित कर रहा है मलखंब, मन की बात कार्यक्रम में बोले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

नई दिल्ली , एजेंसी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को मन की बात में कहा कि भारत के कई खेल दुनिया को आकर्षित कर रहे हैं, जिसमें मलखंब भी शामिल है। श्री मोदी ने अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम मन की बात में देशवासियों से कहा कि जब हमें अपनी चीजों पर गर्व होता है, तो दुनिया में भी उनके प्रति जिज्ञासा बढ़ती है। जैसे हमारे आध्यात्म ने, योग ने, आयुर्वेद ने, पूरी दुनिया को आकर्षित किया है। हमारे कई खेल भी दुनिया को आकर्षित कर रहे हैं।

आजकल हमारा मलखंब भी कई देशों में प्रचलित हो रहा है। अमरीका में चिन्मय पाटणकर और प्रज्ञा पाटणकर ने जब अपने घर से ही मलखंब सिखाना शुरू किया था, तो उन्हें भी अंदाजा नहीं था कि इसे इतनी सफलता मिलेगी। उन्होंने कहा कि अमरीका में आज कई स्थानों पर मलखंब ट्रेनिंग सेंटर चल रहे हैं। बड़ी संख्या में अमरीका के युवा इससे जुड़ रहे हैं। मलखंब सीख रहे हैं। जर्मनी हो, पोलैंड हो, मलेशिया हो, ऐसे करीब 20 अन्य देशों में भी मलखंब खूब लोकप्रिय हो रहा है। अब तो इसकी वर्ल्ड चैंपियनशिप शुरू की गई है, जिसमें कई देशों के प्रतिभागी हिस्सा लेते हैं। श्री मोदी ने कहा कि भारत में तो प्राचीन काल से कई ऐसे खेल रहे हैं, जो हमारे भीतर असाधारण विकास करते हैं। हमारे माइंड, बॉडी बैलेंस को एक नए आयाम पर ले जाते हैं। लेकिन संभवतः नई पीढ़ी के हमारे युवा साथी मलखम्ब से उतना परिचित ना हो। आप इसे इंटरनेट पर जरूर सर्च करिए और देखिए। उन्होंने कहा कि हमारे देश में कितने ही मार्शल आर्ट्स हैं। मैं चाहूंगा कि हमारे युवा-साथी इनके बारे में भी जाने, इन्हें सीखें और समय के हिसाब से नयी पहल भी करें। जब जीवन में बड़ी चुनौतियां नहीं होती हैं, तो व्यक्तित्व का सर्वश्रेष्ठ भी बाहर निकल कर नहीं आता है, इसलिए अपने आप को हमेशा चैलेंज करते रहिए।

अयास की सबसे बड़ी जीत, 19 साल के टैरेंर ने 5 गोल और 3 असिस्ट किए

नीदरलैंड की लीग इरेडीवीसी में अयास ने वीवीवी वेंलो को 13-0 से हराया। घरेलू लीग में यह अयास की सबसे बड़ी जीत है। 19 साल के लसीना टैरेंर ने 5 गोल और 3 असिस्ट किए। एकलेकैंप और हंटेलार ने दो-दो गोल किए। वेंलो की भी यह सबसे बड़ी हार है।

प्ले-ऑफ के लिए रॉयल्स की उम्मीदें बरकरार, हार के बावजूद मुंबई इंडियंस टॉप पर

ब्रिस्बेन | एजेंसी।

आईपीएल के 13वें सीजन के 45वें मैच में राजस्थान रॉयल्स (क्र) ने मुंबई इंडियंस को 8 विकेट से हरा दिया। रॉयल्स पॉइंट्स टेबल में छठवें नंबर पर पहुंच गई। प्ले-ऑफ के लिए रॉयल्स की उम्मीदें बरकरार हैं। इसी के साथ चेन्नई सुपर किंग्स प्ले-ऑफ की दौड़ से पूरी तरह बाहर हो गई है। वहीं, हार के बावजूद मुंबई टॉप पर काबिज है। स्टोक्स ने लीग में अपना दूसरा शतक लगाया। अबु धाबी में खेले गए मैच में मुंबई ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 196 रन का टारगेट दिया था। इसके जवाब में राजस्थान ने 18.2 ओवर में 2 विकेट गंवाकर 196 रन बनाते हुए मैच जीत लिया।

स्टोक्स-सैमसन ने पारी संभाली

लक्ष्य का पीछा करने उतरी राजस्थान की शुरुआत अच्छी नहीं रही थी। मुंबई के तेज गेंदबाज जेम्स पैटिंसन ने टीम को शुरुआती 2 झटके दिए। उन्होंने कप्तान स्टीव स्मिथ को 11 रन पर बोल्ड किया और उथप्पा (13) को कीरोन पोलार्ड के हाथों कैच आउट कराया। ओपनर बेन स्टोक्स ने एक छोर संभाले रखा। उन्होंने 60 बॉल पर 107 रन की नाबाद पारी खेली। स्टोक्स ने दूसरे विकेट के लिए संजू सैमसन के साथ 152 रन की नाबाद पार्टनरशिप कर टीम को जिताया।

सैमसन के नाम सीजन में सबसे ज्यादा 23 छक्के मैच में संजू सैमसन ने 31 बॉल पर 54 रन की पारी खेली। इस दौरान उन्होंने 3 छक्के और 4 चौके जड़े। इसी के साथ सैमसन सीजन में सबसे ज्यादा 23 छक्के लगाने वाले प्लेयर बन गए हैं। उनके बाद निकोलस पूरन का नंबर है, जिन्होंने 22 छक्के जड़े हैं।

पंड्या की 20 बॉल में 7 छक्के के साथ फिफ्टी हार्दिक पंड्या ने 20 बॉल में फिफ्टी लगाई। उन्होंने 21 बॉल में 60 रन की नाबाद पारी खेली। हार्दिक ने पारी के आखिरी के ओवर में हार्दिक ने 3 छक्के और 2 चौके की मदद से 26 रन बनाए। यह ओवर कार्तिक त्यागी ने किया। इससे पहले 17वें ओवर में हार्दिक ने 4 छक्के लगाकर 25 रन बनाए थे। यह अंकित राजपूत का आखिरी ओवर था। मुंबई के लिए हार्दिक के अलावा सूर्यकुमार यादव ने 40, ईशान किशन ने 37 और सौरभ तिवारी ने 34 रन की पारी खेली। राजस्थान के लिए श्रेयस गोपाल और जोफ्रा आर्चर ने 2-2 विकेट लिए। कार्तिक त्यागी को 1 विकेट मिला।

ईशान-सूर्यकुमार के बीच 83 रन की पार्टनरशिप ईशान को कार्तिक ने आर्चर के हाथों कैच आउट कराया। ईशान और सूर्यकुमार के बीच दूसरे विकेट के लिए 83 रन की पार्टनरशिप हुई। मुंबई के ओपनर क्विंटन डिकॉक 4 बॉल पर 6 रन बनाकर आउट हुए। आर्चर ने उन्हें क्लीन बोल्ड किया। गोपाल ने एक ओवर में मुंबई को दो झटके दिए। उन्होंने सूर्यकुमार को स्टोक्स के हाथों कैच आउट कराया। फिर कीरोन पोलार्ड (6) को बोल्ड किया।

महंगे-सस्ते प्लेयर्स का परफॉर्मेंस राजस्थान की प्लेइंग इलेवन में कप्तान स्टीव स्मिथ और बेन स्टोक्स 12.50-12.50 करोड़ रुपए कीमत के साथ सबसे महंगे प्लेयर रहे। स्मिथ ने 8 बॉल पर 11 रन बनाए। वहीं, स्टोक्स ने 60 बॉल पर नाबाद 107 रन की पारी खेली। टीम में श्रेयस गोपाल और रियान पराग 20-20 लाख रुपए कीमत के साथ सबसे सस्ते खिलाड़ी रहे। श्रेयस ने 4 ओवर में 30 रन देकर 2 विकेट लिए। जबकि, पराग को बैटिंग का मौका नहीं मिला।

वहीं, मुंबई की प्लेइंग इलेवन में हार्दिक पंड्या सबसे महंगे खिलाड़ी रहे। टीम उन्हें एक सीजन का 11 करोड़ रुपए देगी। हार्दिक ने 21 बॉल पर नाबाद 60 रन बनाए। वहीं, सौरभ तिवारी 50 लाख रुपए की कीमत के साथ सबसे सस्ते प्लेयर रहे। सौरभ ने 25 बॉल पर 34 रन की पारी खेली।

मुंबई की प्लेइंग इलेवन में एक बदलाव

लगातार दूसरे मैच में अनफिट रोहित शर्मा की जगह कीरोन पोलार्ड मुंबई की कप्तानी की। टीम में एक बदलाव किया गया। नाथन कुल्टर-नाइल की जगह जेम्स पैटिंसन को मौका मिला। वहीं, राजस्थान की प्लेइंग इलेवन में कोई बदलाव किया गया।

दोनों टीम में विदेशी खिलाड़ी मुंबई की प्लेइंग इलेवन में क्विंटन डिकॉक, कीरोन पोलार्ड, जेम्स पैटिंसन और ट्रेंट बोल्ट जैसे विदेशी प्लेयर रहे। राजस्थान टीम में कप्तान स्टीव स्मिथ समेत बेन स्टोक्स, जोस बटलर और जोफ्रा आर्चर विदेशी खिलाड़ी शामिल रहे। मुंबई ने सबसे ज्यादा 4 बार खिताब जीता आईपीएल इतिहास में मुंबई ने सबसे ज्यादा 4 बार (2019, 2017, 2015, 2013) खिताब जीता है। पिछली बार उसने फाइनल में चेन्नई को 1 रन से हराया था। मुंबई ने अब तक 5 बार फाइनल खेला है।

वहीं, राजस्थान ने आईपीएल का पहला सीजन अपने नाम किया था।

भाई के लिए बोले सनी देओल, बॉबी को जितना मिल रहा है

अभिनेता से राजनेता बने सनी देओल राजनीति के साथ अभिनय पर भी ध्यान दे रहे हैं। अब एक बार फिर एक्टर एक्टिंग की दुनिया में कदम रखने वाले हैं। कुछ दिनों से फिल्मों से दूर सनी देओल जल्द ही नए फिल्म प्रोजेक्ट की घोषणा करेंगे। साथ ही एक्टर पॉलीटिक्स के साथ साथ अपनी एक्टिंग को भी जारी रखना चाहते हैं। ऐसे में एक्टर से जानते हैं कि उनका क्या प्लान है और जागरण को दिए गए इंटरव्यू में उन्होंने अपने प्लान के बारे में क्या बताया...

- जिसे अपने काम से प्यार है, वह कभी रिटायर नहीं होता। हर इंसान का जिंदगी की तरफ देखने का अपना नजरिया होता है, जिसके मुताबिक वह चलता है। मेरे ख्याल से जिसने हमेशा काम किया हो, वह कभी बैठ नहीं सकता है।

- पता नहीं, लेकिन संतुलन बनता जा रहा है। राजनीति मेरे लिए नया अनुभव है। मैंने सोचा नहीं था कि कभी इस क्षेत्र में भी आऊंगा। अब आ गया हूं, तो इसे समझने की कोशिश कर रहा हूं। हर इंसान अपने आपको परिस्थिति के मुताबिक ढाल लेता है। मेरे ख्याल से जो जैसा इंसान है, उसी तरह से उस पेशे को हैंडल करेगा। बॉबी देओल ने डिजिटल प्लेटफॉर्म के जरिए कॅरियर की दूसरी पारी शुरू की है, उसे कैसे देख रहे हैं? उनकी दूसरी पारी आपको काम और डिजिटल के प्रति कितना आकर्षित कर रही है? - बॉबी उससे ज्यादा के हकदार हैं, जो उन्हें मिल रहा है। मेरे ख्याल से वह अब बिल्कुल सही ट्रैक पर हैं। जहां तक बात है आकर्षित होने की तो, अब डिजिटल और तकनीक की वजह से फॉर्मेट काफी बदल गया है। पहले लोग मिलकर फिल्म के बारे में सारी बातें करते थे, अब फोन पर ही सब बातें हो जाती हैं। पर्दे के बाद टीवी और अब मोबाइल पर लोग फिल्में वगैरह देखने लगे हैं। एंटरटेनमेंट का अंदाज बदल चुका है। - बॉबी ने जब कॅरियर शुरू किया, तब भी उन्हें कुछ सिखाने की जरूरत नहीं पड़ी थी। उनमें अभिनय के प्रति हमेशा से ही जुनून था। वह पापा के साथ उनकी फिल्मों की शूटिंग पर जाते थे। उन्होंने इंडस्ट्री में आने से पहले खुद को पूरी तरह तैयार किया था। जब इंसान कॅरियर के लिए कुछ तय कर लेता है, तो आप उसे टिप्स नहीं दे सकते। वैसे भी फिल्म इंडस्ट्री एक ऐसी जगह है, जहां कोई टिप्स काम नहीं आ सकती है। इंडस्ट्री में किसी के मुताबिक कुछ नहीं होता। यहां बस मेहनत काम आती है। काम से प्यार होना चाहिए, जितनी मेहनत करेंगे, उतनी ही तेजी से आगे बढ़ेंगे।- मैं बहुत कुछ करने की योजना बना रहा हूं। मैं बतौर अभिनेता अपना कॅरियर फिर से शुरू कर रहा हूं। बीच में, मैं अभिनय नहीं कर रहा था। आने वाले एक साल में कई प्रोजेक्ट्स की योजना बन चुकी है और जल्द ही उनकी घोषणा करने वाला हूं। - फिलहाल मैं नई फिल्मों पर ध्यान दे रहा हूं। नए विषयों और आइडियाज पर काम कर रहा हूं। आगे चलकर कॅरियर जिस ओर रुख करेगा, उसके मुताबिक काम करूंगा। अपने प्रोडक्शन की फिल्मों पर तो कभी भी काम शुरू कर सकता हूं।अब स्टार किड पर दबाव ज्यादा होता है। क्या आपने वह दबाव महसूस किया था, जब बेटे करण को लांच कर रहे थे? - जब मैंने अभिनय की शुरुआत की थी, तब ऐसी चीजें नहीं थीं। सोशल मीडिया की वजह से दुनिया बहुत बदल चुकी है। जैसे-जैसे वक्त गुजरता है आप चीजों को अपनाते हुए जीवन जीते हैं, यही जिंदगी है। इसके बारे में ज्यादा न सोचें तो बेहतर है, क्योंकि इसका कोई उपाय नहीं है। - जल्द ही राजवीर भी फिल्मों में आएंगे। उनकी फिल्म पर भी काम चल रहा है। मैं इसलिए उनके बारे में ज्यादा बात नहीं करता, क्योंकि फिर लोग कहने लग जाते हैं कि स्टार किड है। मैं उन चर्चाओं में जाना ही नहीं चाहता। वे जब भी फिल्मों में आएंगे, मैं उन्हें चुपचाप आगे लेकर जाऊंगा। हमारे पूरे परिवार में सभी कलाकार हैं, स्टार नहीं। फिल्म हिट हो जाती है, तो हम स्टार बन जाते हैं, लेकिन हम अपने काम का आनंद एक स्टार की तरह नहीं, बल्कि कलाकार की तरह लेते हैं।

करीना कपूर खान शाहिद कपूर के संग अपनी फोटो शेयर करके लिखा- रियल में इंसान जो चाहता है...

इम्तियाज़ अली की फ़िल्म जब वी मेट, करीना कपूर ख़ान और शाहिद कपूर के करियर की सबसे यादगार और कामयाब फ़िल्मों में शामिल है। जब वी मेट आज से 13 साल पहले 26 अक्टूबर 2007 को रिलीज़ हुई थी। करीना ने फ़िल्म की शूटिंग की एक फोटो इंस्टाग्राम पर फ़िल्म से एक खूबसूरत लाइन लिखी है।

करीना ने जो तस्वीर शेयर की है, उसमें इम्तियाज़ अली, शाहिद कपूर और वो खुद हैं। तीनों किसी दृश्य को शूट करने के बाद मॉनिटर देख रहे हैं। फोटो के साथ करीना ने लिखा- मुझे तो लगता है, लाइफ़ में जो कुछ इंसान रियल में चाहता है, एक्चुअल में, उसे वो ही मिलता है। जब वी मेट एक रोमांटिक ड्रामा फ़िल्म थी, जिसमें करीना ने गीत नाम की एक बेहद बातूनी और चुलबुली लड़की का किरदार निभाया था, जो ज़िंदगी को संजीदगी से नहीं लेती, मगर जब उसे प्यार में धोखा मिलता है तो उसकी पूरी शख्सियत ही बदल जाती है। फ़िल्म में शाहिद ने बिज़नेस घराने के एक लड़के का किरदार निभाया था, जो अपनी ज़िंदगी में कोई उल्लास ना होने से डिप्रेशन में चला जाता है, मगर संयोगवश एक दिन जब उसकी मुलाक़ात गीत से होती है तो उसका नज़रिया ही बदल जाता है। जब वी मेट में करीना के अभिनय की खूब तारीफ़ हुई थी। हालांकि, इस फ़िल्म की शूटिंग के दौरान उन्हें निजी ज़िंदगी में झटका भी लगा था। शाहिद के साथ उनकी रिलेशनशिप फ़िल्म ख़त्म-ख़त्म होते-होते टूट चुकी थी। इसके बाद ही सैफ़ अली ख़ान उनकी ज़िंदगी में आये। करीना को बेस्ट एक्ट्रेस का फ़िल्मफेयर अवॉर्ड भी मिला था।

उर्वशी रौतेला ने शेयर किया नेहा कक्कड़ की शादी का वीडियो

बॉलिवुड की दिलकश सिंगर नेहा कक्कड़ 24 अक्टूबर को रोहनप्रीत के साथ शादी के बंधन में बंध गई हैं। सोशल मीडिया पर इस शादी की तस्वीरें और वीडियो खूब धूम मचाए हैं। नेहा कक्कड़ की शादी के कुछ नए वीडियो बॉलिवुड ऐक्ट्रेस उर्वशी रौतेला ने शेयर किए हैं। उर्वशी रौतेला भी नेहा कक्कड़ी की शादी में पहुंची थीं, जिसका वीडियो उन्होंने अपने इंस्टाग्राम पर शेयर किया है। इस वीडियो में उर्वशी रौतेला लाजवाब दिख रही हैं। उर्वशी ने यह वीडियो शेयर करते हुए नेहा और रोहनप्रीत को शादी की बधाई देते हुए उन्हें परफेक्ट कपल बताया है। उर्वशी रौतेला भी नेहा कक्कड़ी की शादी में पहुंची थीं, जिसका वीडियो उन्होंने अपने इंस्टाग्राम पर शेयर किया है। इस वीडियो में उर्वशी रौतेला लाजवाब दिख रही हैं। उर्वशी ने यह वीडियो शेयर करते हुए नेहा और रोहनप्रीत को शादी की बधाई देते हुए उन्हें परफेक्ट कपल बताया है। यहां शादी में पहुंचीं उर्वशी रौतेला ने टोनी कक्कड़ के साथ डांस भी किया और इसका वीडियो भी सोशल मीडिया पर आग लगा रहा है। इस वीडियो में सामने नेहा और रोहनप्रीत बैठे नजर आ रहे हैं और स्टेज पर टोनी कक्कड़ के साथ उर्वशी लाजवाब परफॉर्मेंस देती दिख रही हैं। बता दें कि पिछले काफी समय से नेहा और रोहनप्रीत की शादी सुर्खियों में रही है। पिछले दिनों नेहा ने अपनी रोका सेरिमनी का वीडियो शेयर किया और फिर हल्दी और मेहंदी की ढेर सारी तस्वीरें उन्होंने शेयर कीं।

लवीना लोध के पति सुमित सभरवाल बोले- ड्रग्स और महेश भट्ट से कोई संबंध नहीं

कुछ दिनों पहले बॉलिवुड ऐक्ट्रेस लवीना लोध ने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो शेयर किया था। इस वीडियो में उन्होंने दावा किया था कि महेश भट्ट ने उनका कथित तौर पर शोषण किया था। लवीना ने यह भी आरोप लगाया था कि उन्होंने अपने पति सुमित सभरवाल से इसलिए तलाक का फैसला लिया क्योंकि वह ड्रग्स की सप्लाई करते हैं। अब लवीना के इन आरोपों पर सुमित का रिऐक्शन सामने आया है। लवीना के वीडियो की आलोचना करते हुए एक स्टेटमेंट में सुमित के वकील ने कहा, हम अपने क्लायंट सुमित सभरवाल के लिए चिंतित हैं। हमारे क्लायंट की एक्स वाइफ लवीना लोध द्वारा सर्कुलेट किए गए वीडियो में किए गए दावे गलत हैं। हमारे क्लायंट को बेहद दुख है कि उनके साल 2016 से लटके हुए वैवाहिक झगड़े के कारण महेश भट्ट और मुकेश भट्ट का नाम खराब किया जा रहा है। बता दें कि अपने वीडियो में लवीना लोध ने कहा था कि महेश भट्ट फिल्म इंडस्ट्री के सबसे बड़े डॉन हैं और उनके पति भी उनसे संबंधित हैं। हालांकि सुमित के वकील ने कहा कि वह (सुमित) केवल महेश और मुकेश भट्ट की कंपनी विशेष फिल्म्स में एक कर्मचारी थे और महेश भट्ट से संबंधों के बारे में कही गई बातें पूरी तरह साजिशन रची गई हैं। वकील ने दावा किया कि लीवना ने तलाक के सेटलमेंट में फायदा लेने के लिए ये सारे आरोप लगाए हैं। गौरतलब है कि इससे पहले विशेष फिल्म्स और महेश भट्ट के वकील ने भी लवीना लोध के आरोपों को खारिज किया था। उन्होंने कहा था कि यह आरोप न केवल बेबुनियाद हैं बल्कि इसके लिए लवीना को कानूनी कार्रवाई का भी सामना करना पड़ेगा। वकील ने यह भी कहा था कि लवीना के बयानों पर महेश भट्ट सख्त ऐक्शन लेंगे।

अमेरिकी रेस्त्रां पर भड़कीं अनन्या बिड़ला, कहा- नस्लभेदी ने मेरी फैमिली को बाहर फेंक दिया

म्यूजिक सेंसेशन और युवा बिजनस वुमन अनन्या बिड़ला ने ट्विटर पर अपनी भड़ास निकाली है। आदित्य बिड़ला ग्रुप के चेयरमैन कुमार मंगलम बिड़ला की बेटी अनन्या का गुस्सा एक अमेरिकी रेस्त्रां पर फूटा है। अनन्या से रेस्त्रां को नस्लभेदी बताते हुए कहा कैलिफोर्निया के इस इटालियन-अमेरिकी रेस्त्रां ने उनके परिवार को और उन्हें रेस्त्रां से सिर्फ इसलिए बाहर फेंक दिया कि वो एशियन हैं। अनन्या ने ट्विटर पर अपनी बात रखते हुए कहा कि यह सही नहीं है। अनन्या ने अपने ट्वीट में लिखा है, स्कोपा रेस्त्रां ने मेरे परिवार और मुझे सचमुच अपने परिसर से बाहर निकाल दिया। यह नस्लभेद और बहुत दुखद है। आपको यकीनन अपने ग्राहकों के साथ अच्छा व्यवहार करने की आवश्यकता है। यह बहुत ही नस्लभेदी है और यह ठीक नहीं है। बता दें कि यह स्कोपा रेस्त्रां कैलिफोर्निया में है और शेफ एंटोनियो लोफासो का है। अनन्या ने एक के बाद एक ट्वीट में रेस्त्रां पर गंभीर आरोप लगाते हुए लिखा है, हमने आपके रेस्त्रां में खाने के लिए 3 घंटे इंतजार किया। शेफ एंटोनियो आपके वेटर जोशुआ सिल्वमैन ने मेरी मां के साथ बेहूदा बर्ताव किया, सीमावादी नस्लभेद। यह सही नहीं है। अनन्या, कुमार मंगलम बिड़ला की बेटी हैं। उनकी मां नीरजा बिड़ला शिक्षाविद हैं और मेंटल हेल्थ अनन्या के बाद उनकी मां नीरजा बिड़ला ने भी बेटी के ट्वीट को रीट्वीट करते हुए रेस्त्रां पर गुस्सा जाहिर किया। नीरजा ने अपने ट्वीट में लिखा, बहुत ही चौंकाने वाली बात... स्कोपा रेस्त्रां द्वारा बिल्कुल भद्दा व्यवहार।

अनुष्का शर्मा समेत ये हैं 9 सबसे खतरनाक सेलेब्स

सुहाना खान मम्मी गौरी खान के साथ पहुंची दुबई के पार्लर इन दिनों अपने परिवार के साथ यूएई में आईपीएल देखने पहुंची हुई हैं. सुहाना खान केकेआर को सपोर्ट करने के लिए पहुंच गई हैं, जहां से वह लगातार अपने फोटो और वीडियो फैन्स के साथ साझा कर रही हैं. अब हाल ही में सुहाना अपनी मॉम गौरी खान के साथ पार्लर में गई, जहां से उन्होंने अपना पूरा मेकओवर करवाया. जिसकी तस्वीरें सुहाना ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर शेयर किया है. सुहाना इन तस्वीरों में अपना नेल आर्ट दिखाती नजर आ रही हैं. वहीं, सुहाना और गौरी खान की इन तस्वीरों को दुबई के सैलून ने अपने इंस्टाग्राम एकाउंट पर शेयर किया है. गौरी और सुहाना की इन तस्वीरों को शेयर करते हुए पार्लर ने उन्हें धन्यवाद दिया. सुहाना खान और गौरी खान की इन तस्वीरों पर फैन्स खूब कमेंट कर रहे हैं और अपनी प्रतिक्रिया दे रहे हैं. बता दें कि यह पहली बार नहीं है जब सुहाना खान अपने ग्लैमरल लुक्स को लेकर इतनी चर्चा में आई हों. इससे पहले भी वह अपनी फोटो और वीडियो को लेकर खूब सुर्खियों में थीं. स्टार किड्स की चर्चा में सुहाना खान हमेशा आगे रहती हैं.

एस.सी.ने खारिज की दिशा सालियन के मौत की सी.बी.आई जांच की मांग, कहा- हाईकोर्ट जाइए

सुशांत सिंह राजपूत की एक्स मैनेजर दिशा सालियन की मौत को लेकर भी तमाम तरह के सवाल उठे। मुंबई पुलिस ने दिशा की मौत को आत्महत्या बताया। जबकि दिशा के परिवार ने भी किसी और आशंका से इनकार किया है। अब सुप्रीम कोर्ट ने उस अर्जी पर सुनवाई से इनकार कर दिया है, जिसमें दिशा की मौत की जांच कोर्ट की निगरानी में सीबीआई से करवाने की मांग की गई थी। सर्वोच्च न्यायालय ने याचिकाकर्ता से कहा है कि वह अपनी अर्जी वापस ले और बॉम्बे हाई कोर्ट का दरवाजा खटखटाए। न्यूज एजेंसी एएनआई के मुताबिक, सुप्रीम कोर्ट ने न्यायालय की निगरानी में दिशा सालियन की मौत की सीबीआई जांच की याचिका को खारिज कर दिया है। कोर्ट ने सुनवाई करने से इनकार करते हुए याचिकाकर्ता को बॉम्बे हाई कोर्ट जाने के लिए कहा है। सुप्रीम कोर्ट में यह अर्जी अगस्त महीने में तब दी गई थी। जब कोर्ट ने सुशांत सिंह राजपूत की मौत की सीबीआई जांच के आदेश दिए थे।

कोर्ट में यह याचिका वकील पुनीत ढांडा ने दी थी। वकील ने अपनी याचिका में दावा किया था कि सुशांत सिंह राजपूत और दिशा सालियन की मौत का मामला आपस में कहीं न कहीं जुड़ा हुआ है। सुशांत की तरह ही दिशां की मौत भी संदेहास्पद परिस्थितियों में हुई है। ऐसे में सुशांत केस की तरह ही दिशा मामले की भी सीबीआई द्वारा निष्पक्ष जांच होनी चाहिए।

सीबीआई फिलहाल, सुशांत सिंह राजपूत की मौत की जांच कर रही है। इसके साथ ही नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो और प्रवर्त्तन निदेशालय भी मामले की जांच में जुटे हुए हैं। ऐक्टर की लाश 14 जून को मुंबई स्थित उनके घर से मिली थी। मुंबई पुलिस ने मामले को आत्महत्या बताया, जिसके बाद से ही पुलिस की जांच पर सवाल उठने लगे। सुशांत की मौत की जांच कर रही तीनों एजेंसी ने अपने पत्ते नहीं खोले हैं और यही कहा है कि जांच अभी जारी है।

राणा दग्गुबाती की पत्नी मिहिका बजाज ने बंगाली स्टाइल में साड़ी पहनकर फैमिली के साथ शेयर की फोटो

साउथ इंडियन एक्टर राणा दग्गुबाती और मिहीका बजाज के लिए यह दशहरा बेहद खास है क्योंकि यह उनकी शादी के बाद का पहला दशहरा है. इस खास मौके पर राणा दग्गुबाती की पत्नी मिहिका बजाज ने फैमिली के साथ दशहरा स्पेशल फोटो शेयर किया है. इस फोटो में मिहीका अपने पापा और मां के साथ नजर आ रही हैं. एक्ट्रेस ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट से अपनी माता- पिता के साथ फोटो शेयर किया है जिसमें राणा दग्गुबाती भी नजर आ रहे हैं. इस फोटो को शेयर करते हुए मीहिका ने लिखा- हैप्पी दशहरा इस फोटो में मिहीका के लुक की जितनी भी तारीफ कि जाए कम है. उन्होंने ऑफ-व्हाइट ब्लाउज के साथ पर्पल साड़ी पहना हुआ है. साथ ही मिहीका बिल्कुल ट्रेडिशनल अवतार में नजर आ रहीं थी साथ ही साथ हेवी ज्वेलरी भी पहन रखा है. इस खास मौके पर राणा दग्गुबाती व्हाइट कलर का कुर्ता और डेनिम जिंस में नजर आ रहे हैं. आपको बता दें कि इसी साल अगस्त महीने में मिहीका बजाज और राणा दग्गुबाती ने हैदराबाद में ग्रैंड तरीके से शादी रचाई थी. मिहीका बजाज और राणा दग्गुबाती ने हाल ही में वेकेशन एनजॉय करते हुए अपनी एक सेल्फी शेयर की थी. इस सेल्फी में दोनों सन- बाथिंग लेते हुए नजर आ रहे थे. इस फोटो के साथ उन्होंने दिल वाली इमोजी भी बनाई थी. साथ ही साथ राणा दग्गुबाती और मिहीका बजाज एम्स्टर्डम में हनीमून मनाने जाने वाले थे लेकिन कोरोनावायरस की वजह से दोनों नहीं जा पाए. शादी के एक हफ्ते बाद मिहीका ने अपने पति के लिए एक प्यारे से नोट के साथ शादी का एल्बम शेयर किया था. मिहीका ने लिखा था- मेरा प्यार, मेरी लाइफ, मेरी दिल, मेरी आत्मा. सबकुछ तुम हो और इसके लिए थैंक्यू. आपसे मुझे लाइफ में एक बेहतर इंसान बनने की प्रेरणा मिलती है और मैं आपसे बहुत प्यार करती हूं. राणा दग्गुबाती साउथ इंडियन फिल्म इंडस्ट्री के सुपरहिट एक्टर हैं तो वहीं मिहीका पेशे से इंटीरियर डिजाइनिंग और इवेंट मैनेजमेंट फर्म चलाती हैं. मिहीका ने चेल्सी यूनिवर्सिटी से इंटीरियर डिजाइनिंग का कोर्स किया है. वहीं राणा दग्गुबाती ने बाहुबली में भल्लालदेव के किरदार से लोगों के दिलों में अपनी एक खास पहचान बनाई है. वर्कफ्रंट की बात करें तो राणा दग्गुबाती जल्द ही अगले साल रिलीज हाथी मेरे साथी में दिखाई देंगे.

मोनालिसा ने गुलाबी साड़ी पहन ओ रे पिया गाने पर झूमकर किया डांस

मोनालिसा भोजपुरी एक्ट्रेस हैं और टेलीविजन पर भी अपनी एक्टिंग से फैन्स का दिल जीत चुकी हैं. मोनालिसा सोशल मीडिया पर भी एक्टिव हैं, और समय-समय पर अपने डांस वीडियो से फैन्स से रू-ब-रू होती रहती हैं. मोनालिया ने एक नया वीडियो शेयर किया है जिसमें फैन्स को उनका स्वैग और डांस दोनों बहुत पसंद आ रहे हैं. मोनालिसा ने इस वीडियो को अपनी इंस्टाग्राम रील्स पर शेयर किया है और इसमें हैशटैग दुर्गा पूजा डाला है. मोनालिया भोजपुरी सिनेमा का जाना-पहचाना चेहरा हैं. मोनालिसा इस वीडियो में रितेश देशमुख और जेनेलिया डिसूजा की फिल्म तेरे नाल लव हो गया के सॉन्ग पिया ओ रे पिया पर डांस कर रही हैं. इस गाने को आतिफ असलम ने गाया है. मोनालिसा ने इस वीडियो में गुलाबी रंग की साड़ी पहन रखी है और बहुत ही शानदार अंदाज में डांस कर रही हैं. फैन्स को उनका यह अंदाज पसंद भी आ रहा है. एक्ट्रेस मोनालिसा ने मनी है तो हनी है, सरकार राज, गंगा पुत्र और काफिला जैसी कई बॉलीवुड फिल्मों में काम किया है. मोनालिसा स्टार प्लस के सीरियल नजर में डायन का किरदार निभा चुकी हैं. मोनालिसा ने बिग बॉस 10 में भी अपने अंदाज से खूब पहचान बनाई थी. शो में उनके साथ उनके पति विक्रांत सिंह राजपूत ने भी हिस्सा लिया था और बिग बॉस के घर में ही दोनों की शादी हुई.

मॉडल सेजल शाह बॉलीवुड में करने जा रही हैं डेब्यू, ओटीटी पर रिलीज होगी पहली फिल्म

मॉडलिंग से फिल्मों की दुनिया में कदम रखने जा रही हैं मॉडल सेजल शाह. सेजल शाह की पहली फिल्म है ऑल लेडीज डू इट. यह फिल्म ओटीटी प्लेटफॉर्म पर 10 नवंबर को रिलीज होगी. फिल्म के निर्देशक अखिल गौतम हैं. इससे पहले सेजल वीडियो एलबमों और वेब सीरीज में अभिनय कर चुकी हैं. सेजल शाह मध्य प्रदेश के रतलाम की रहने वाली हैं. वह छह साल पहले मुंबई आई थीं. चार साल तक उन्होंने एक्ट्रेस बनने के लिए स्ट्रगल किया. सेजल बताती हैं जिस ईवेंट मैनेजमेंट कंपनी में काम करती थीं, वहां की मॉडल को-ऑर्डिनेटर ने मॉडल बनने का प्रस्ताव दिया. यहां से सेजल की मॉडलिंग की दुनिया में एंट्री हो गई. वह कई फैशन डिजाइनरों के लिए रैंप पर चलीं और फिर उन्हें वीडियो एलबम तथा वेबसीरीज के ऑफर मिले. इनमें उन्हें दर्शकों ने खूब पसंद किया. मेरे हस्बैंड की दुल्हनिया और गन पॉइंट जैसी वेब सीरीज के बाद वह फिल्मों में आ रही हैं. उनकी फिल्म देवदासी भी बनकर तैयार है. सेजल शाह कहती हैं कि उनका लक्ष्य बॉलीवुड सितारों के साथ काम करना नहीं है. वह दिग्गज निर्देशकों की फिल्में करना चाहती हैं. उनका सपना संजय लीला भंसाली की किसी ऐतिहासिक फिल्म का हिस्सा बनना है. वह कहती हैं कि मैं खुद ऐतिहासिक फिल्में प्रोड्यूस करना चाहती हूं, जिनमें हमारे इतिहास के साथ संस्कृति और त्यौहार खूबसूरती से नजर आए. पारंपरिक परिवार से आने वाली सेजल ऐसे काम करना चाहती हैं जो नई पीढ़ी की लड़कियों के लिए प्रेरणा स्रोत बने. वह लड़कियों को निडर बनाने के साथ समाज की दकियानूसी सोच को बदलने के लिए भी प्रेरित करना चाहती हैं.

मां वैष्णो देवी से लेकर देवों के देव महादेव जैसे कई धार्मिक शो में दिख चुकी हैं एक्ट्रेस

नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो ने टीवी एक्ट्रेस प्रीतिका चौहान को ड्रग्स खरीदने के आरोप में रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। इस ऑपरेशन में पांच लोगों को गिरफ्तार किया है। एक्ट्रेस प्रीतिका के साथ एक फैजल नाम के शख्स को भी गिरफ्तार किया है। वहीं, एजेंसी ने आरोपियों को कोर्ट में पेश कर दिया है। बताया जा रहा है कि आरोपियों के पास 99 ग्राम गांजा बरामद किया है।प्रीतिका हिमाचल प्रदेश की कारसोग की रहने वाली हैं। साथ ही एक्ट्रेस बीटेक ग्रेजुएट हैं। एक्ट्रेस ने फिल्म झमेला से अपने फिल्मी करियर की शुरुआत की थी, जो साल 2016 में रिलीज हुई थी। इसके बाद उन्होंने कई फिल्मी सीरियल में काम किया है। एक्ट्रेस ने सीरियल संकटमोचन महाबली हनुमान में साची का किरदार निभाया था। वहीं संकटमोचन महाबली हनुमान के अलावा उन्होंने सीआईडी और सावधान इंडिया में भी नज़र आ चुकी हैं। इन सीरियल्स के अलावा एक्ट्रेस स्टार भारत के शो जग जननी मां वैष्णो देवी में भूदेवी के रुप में और देवों के देव महादेव में नज़र आई थीं। इसके अलावा एक्ट्रेस ने संतोषी मां-सुनाएं व्रत कहानियां में पार्वती के रुप में दिखाई दी थीं। एक्ट्रेस ने अधिकतर धार्मिक सीरियल्स में काम किया है और टीवी के पर्दे पर उनके किरदार देवी-देवताओं के रहे हैं। बता दें कि इससे पहले एनसीबी ने सुशांत सिंह राजपूत सुसाइड केस से जुड़े एक ड्रग्स केस में एक्ट्रेस रिया चक्रवर्ती को गिरफ्तार किया था।

कंचन उजाला
हिंदी दैनिक

स्वामी नमोकंचन कार्पोरेट सर्विसेस (एल.एल.पी) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक कंचन सोलंकी द्वारा उमाकान्ती ऑफसेट प्रेस, ग्राम डेहवा पोस्ट मोहनलाल गंज लखनऊ से मुद्रित एवं 61/18 चुटकी भण्डार हुसैनगंज लखनऊ से प्रकाशित।

संपादक- कंचन सोलंकी

TITLE CODE- UPHIN48974

Mob:
8896925119, 9695670357
Email:
kanchansolanki397@gmail.com

नोटः समाचार पत्र में प्रकाशित समाचारो एवं लेखों से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नही। समस्त विवादो का निस्तारण लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।